

भारत सरकार Government of India
विधि एवं न्याय मंत्रालय Ministry of Law & Justice
विधि कार्य विभाग Department of Legal Affairs
आयकर अपीलीय अधिकरण INCOME TAX APPELLATE TRIBUNAL

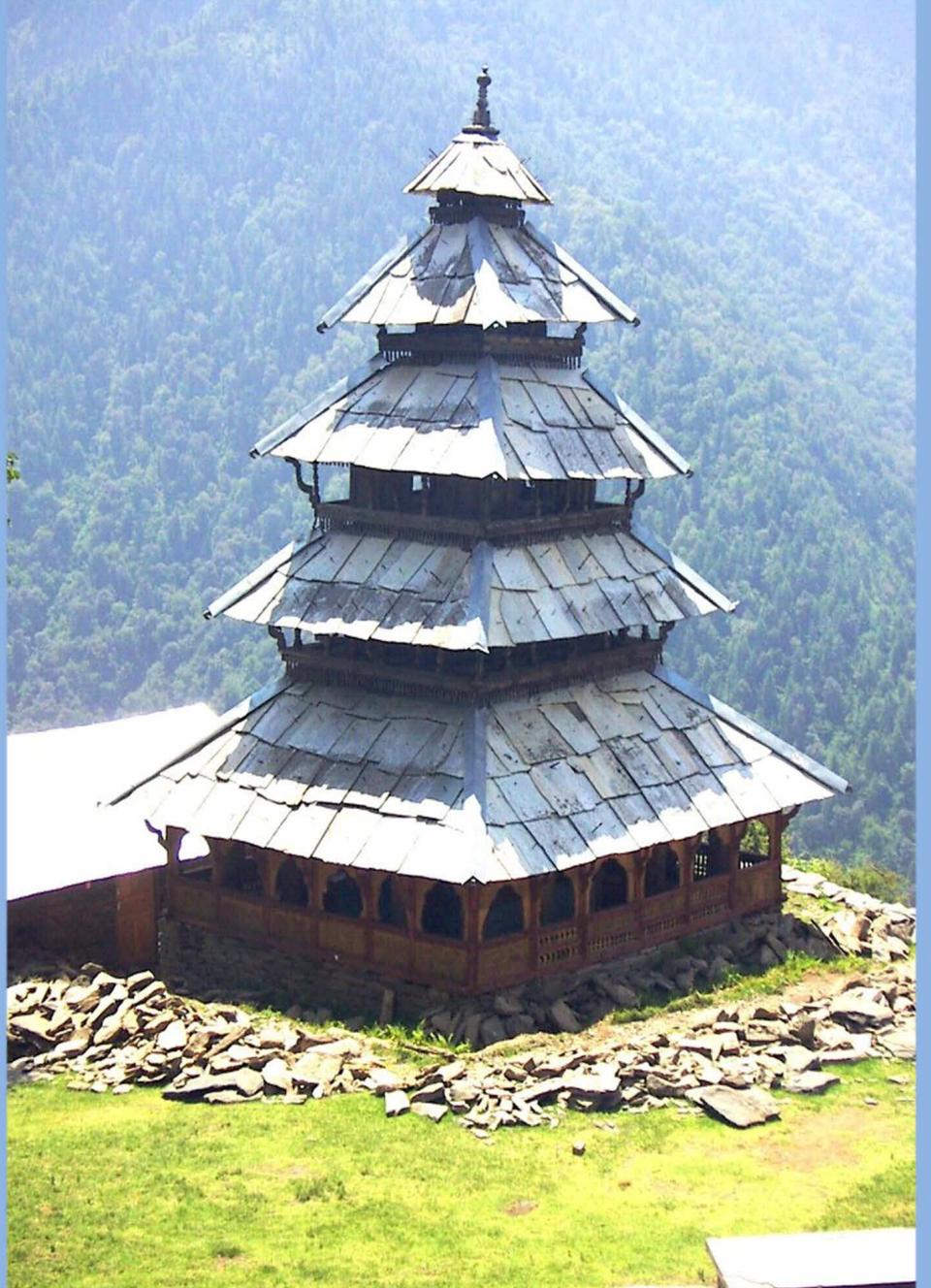


बुलेटिन

जनवरी - दिसंबर
2014

BULLETIN

JAN – DEC
2014



केवल विभागीय प्रयोजन हेतु

FOR DEPARTMENTAL PURPOSE ONLY

बुलेटिन

जनवरी - दिसंबर 2014



श्री राजेन्द्र
लेखा सदस्य एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति



संरक्षक

श्री एच. एल. कारवा
माननीय अध्यक्ष
आयकर अपीलीय अधिकरण

मुख्य संपादक

श्री राजेन्द्र
लेखा सदस्य एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई

उप संपादक

श्री बिजु पी के, सहायक पंजीकार, मुंबई
श्रीमती आशा पाल, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक,
मुंबई

डिजाइन & टंकण

श्री एम एन वीरावधानी, उ.श्रे.लि, मुंबई
श्री तरुण कुमार, उ.श्रे.लि, मुंबई

प्रकाशन एवं मुद्रण

आयकर अपीलीय अधिकरण,
तीसरा एवं चौथा तल, प्रतिष्ठा भवन,
101, महर्षि कर्वे मार्ग, मुंबई - 400020
वेबसाइट: <http://itat.nic.in>

Please send your feedback to:
hindi.ho@itat.nic.in

संपादकीय

बुलेटिन का नया अंक आपके हाथों में सौंपते हुए राजभाषा विभाग प्रकोष्ठ को अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। इस अंक में आपको न्यायाधिकरण परिवार के सदस्यों की नई और ताजगी भरी रचनाएँ पढ़ने को मिलेंगी। इनकी विषय वस्तु और शैली अत्यन्त रोचक है। रचनाकारों के परिश्रम की जितनी तारीफ की जाय उतनी कम है, क्योंकि उनकी कहानियों, लेखों, कविताओं और संस्मरणों का स्तर बहुत ऊँचा है।

जिंदगी में सुख दुःख का चक्र रथ के पहिये की तरह चलता रहता है। गत बुलेटिन से इस बुलेटिन के प्रकाशन के बीच हमारे परिवार के होनहार युवा और लोकप्रिय सदस्य डॉ.एस.टी.एम. पावलन (न्यायिक सदस्य) हमारा साथ छोड़कर चले गए। उनको हम सबकी ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि माननीय अध्यक्ष महोदय ने राजभाषा में अर्पित की है जिसमें महाग्रंथ गीता का निचोड़ समाया है। हम सब सदगत आत्मा को नमन करते हैं।

जैसा पहले कहा गया कि सुख दुःख तो जिंदगी के दो धारे हैं और जिंदगी की विशेषता इसी में है कि यह चलती रहती है। इंसान की जिंदगी और उसकी काया को चलाने के लिए भोजन रूपी ईंधन की जरूरत होती है। माननीय न्यायिक सदस्य श्री जोगिन्दर सिंह ने बड़े ही सरल और सहज शब्दों में जैसा अन्न वैसा तन-मन के सिद्धान्त को पाठकों के सामने प्रभावी तरीके से रखा है। दूसरे लेख में उन्होंने आहार के बारे में सारगर्भित जानकारी दी है।

परिवार के सदस्यों ने स्थानान्तरण जैसे प्रशासनिक विषयों पर समसामयिक चर्चा की है तो देश के सबसे रमणीय प्रान्त कश्मीर के विषय में बहुमूल्य जानकारी जुटाई है। उस लेख को पढ़ते समय पाठक सीधा कश्मीर पहुंच कर वहाँ के मनमोहक दृश्यों का मजा लेने लगता है। यही लेखक की सफलता है। मुंबई महानगरी की तेज रफ्तार जिंदगी में एक दिन का पिकनिक मानने वाले की मनोदशा और उसके उत्साह की झलक आपको सोसायटी पिकनिक में मिलेगी। इस वर्ष मुंबई में हुई निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार पाने वाली रचना को भी हमने प्रकाशित किया है जो भारतीय किसानों के विषय में सारवान सामग्री विषयवस्तु प्रस्तुत करती है। राजभाषा प्रकोष्ठ की इच्छा है कि अन्य स्थानों से भी स्तरीय लेख हमें प्राप्त होते रहें, ताकि उन्हें बुलेटिन में स्थान दिया जा सके। राजभाषा संबंधित दोनों लेख अहिन्दी भाषा भाषी कर्मचारियों ने लिखे हैं इसके बावजूद उनमें विचारों की गंभीरता और गहन चिंतन स्पष्ट रूप से दिखाया देता है।

लेख ही क्यों बुलेटिन में शामिल कहानियाँ भी बहुत आले दर्जे की हैं।

ये रचनाएं संवेदनापूर्ण, मार्मिक और हृदय को छूने वाली हैं। हमारे कथाकार शौकिया कहानी लेखक हैं इसके बावजूद उन्होंने मानवीय चरित्रों का, मानवीय भावनाओं का, जीवन के उतार चढ़ाव का बहुत भी रोचक और वास्तविक वर्णन किया है। नारी का सम्मान, मेरे सपनों का शहर, कहानी जैसी रचनाएं जीवन के अलग अलग पहलुओं का बखूबी वर्णन करती हैं।

राजभाषा प्रकोष्ठ को यह बताते हुए भी गर्व हो रहा है कि न्यायाधिकरण परिवार के सदस्य गद्य विधा में ही नहीं पद्य विधा में भी उतने ही पारंगत हैं। वरिष्ठ न्यायिक सदस्य श्री हरभजन सिंह सिद्ध की दोनों रचनाओं में से कौनसी अधिक अच्छी है कहना कठिन है। बड़े ही सरल लफ्जों में उन्होंने जिंदगी की हकीकत बयाँ की है। व्यंग्य रचना नेता की प्रशंसा में रचनाकार ने बहुत ही प्रभावी तरीके से चुनावों की वास्तविकता को पेश किया है। यदि बायोमेट्रिक मशीन के फायदों को आप जानना चाहते हैं तो गुद्गुदाने वाली काव्य रचना हो गई हूँ परेशान पर खुश हूँ को अवश्य पढ़ें। जिंदगी है तो प्यार होगा और प्यार करने वालों के लिए त्यौहार है वेलेन्टाईन डे। उस एहसास को महसूस करें एक छोटी सी रचना में।

कुल मिलाकर बुलेटिन रूपी इन्द्रधनुष बहुत ही सुन्दर बन पड़ा है और इसका श्रेय जाता है उन सारे रचनाकारों को जिन्होंने इसमें अलग अलग रंग भरकर इसे अत्यन्त सुरम्य बना दिया है। उन सबको राजभाषा प्रकोष्ठ की ओर से धन्यवाद।

आपको यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि मुंबई खंडपीठ में मामलों की सुनवाई से संबद्ध पत्रावलियों में राजभाषा का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। गत वर्ष 70.71 प्रतिशत पत्रावलियों के आदेशफलक(आर्डरशीट)राजभाषा में लिखे गए जो स्वयं एक कीर्तिमान है। प्रकोष्ठ न्यायाधिकरण परिवार के उन सभी सदस्यों का अभिनन्दन करता है जिनकी वजह से यह उपलब्धि मिली है और आशा करता है कि अन्य स्थानों पर भी पत्रावलियों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ेगा।

अन्त में इतना ही कि राजभाषा का प्रयोग बहुत सरल है, यदि आप काम लेंगे तो विश्वास हो जाएगा।

राजेन्द्र

विवरणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
संपादकीय		1-2
अध्यक्ष का पृष्ठ		5-6
श्री डॉ. एस.टी. पावलन के आकस्मिक निधन पर श्रद्धांजली देने हेतु फुल कोर्ट रिफरेंस का आयोजना		7
भोजन और स्वास्थ्य- I	श्री जोगिन्दर सिंह, न्यायिक सदस्य, मुंबई पीठ	
भोजन और स्वास्थ्य - II	श्री जोगिन्दर सिंह, न्यायिक सदस्य, मुंबई पीठ	
अधूरा सांस	श्री हरभजन सिंह सिद्धू, न्यायिक सदस्य, दिल्ली पीठ	
हम झूठ बोलते हैं	श्री हरभजन सिंह सिद्धू, न्यायिक सदस्य, दिल्ली पीठ	
स्थानांतरण	श्री कौशल कुमार, सहायक पंजीकार, कोलकाता पीठ	
कहानी	श्री कौशल कुमार, सहायक पंजीकार, कोलकाता पीठ	
अविस्मरणीय पर्यटन स्थल-कश्मीर	श्री दुर्गेश सावरटकर, कार्यालय अधीक्षक, मुंबई पीठ	
सोसायटी पिकनिक	आर.आर. वानखेड़े, सहायक पंजीकार, नागपुर पीठ	
मेरा दृष्टिकोण हिंदी के पक्ष में	श्रीमती के. विजयलक्ष्मी, मुख्य लिपिक, हैदराबाद पीठ	
नारी का सम्मान	श्रीमती श्रीदेवी नायर, प्रधान लिपिक, मुंबई पीठ	
नेता की प्रशंसा में	डॉ शशि कुमार, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक(तदर्थ), हैदराबाद पीठ	
हो गई मैं परेशान, पर खुश हूं	श्रीमती राजेश्वरी ए., उच्च श्रेणी लिपिक, दिल्ली पीठ	
मेरे सपनों का शहर	श्री जयशंकर कुमार सिंह, अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई पीठ	
भारत का किसान	श्री जयशंकर कुमार सिंह, अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई पीठ	
हिंदी से राष्ट्र की अखंडता है	श्री अमित कुमार, अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई पीठ	
वेलन्टाइन डे	श्री पंकज वर्गी, अवर श्रेणी लिपिक, अहमदाबाद पीठ	
नियुक्तियां एवं सेवा निवृत्तियां		
वर्ष 2014 में प्रकाशित बुलेटिन के सर्वश्रेष्ठ रचना हेतु पुरस्कृत विजेताओं की सूची		
न्यायिक आदेश		28
न्यायिक आदेश		30
न्यायिक आदेश		31
मुंबई पीठ के हिंदी पखवाड़ा-2014 का छायाचित्र		35-36



एच एल कारवा
अध्यक्ष
आयकर अपीलीय अधिकरण



अध्यक्ष का पृष्ठ

प्रिय भाईयों एवं बहनों,

बुलेटिन का नवीन संस्करण प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इस अंक में देश के भिन्न-भिन्न भागों में स्थित अधिकरण के पीठों से अधिकारियों और कर्मचारियों ने रचनाएं भेजी हैं जो हिंदी के प्रति उनके प्रेम को प्रदर्शित करता है। एक अर्ध-न्यायिक संस्थान होने के बावजूद भी अधिकरण में बड़े पैमाने पर हिंदी में कार्य संपादित किया जा रहा है। विधि एवं न्याय मंत्रालय के राजभाषा एकक को भेजी जाने वाली सभी पीठों की समेकित तिमाही रिपोर्ट से पता चलता है कि अधिकरण में हिंदी में अच्छा कार्य हो रहा है। भारत सरकार के किसी संस्थान में राजभाषा हिंदी का सुचारू कार्यान्वयन एक महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण विषय है और इस उत्तरदायित्व के निर्वाह में हम काफी हद तक सफल रहे हैं। यह हमारे लिए गौरव की बात है। भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ और तभी से देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी विधिवत भारत संघ की राजभाषा है। इस प्रकार केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में काम करना हमारी जिम्मेदारी है और यह राष्ट्र एवं संविधान के प्रति हमारे प्रेम और आदर को व्यक्त करता है।

आयकर अपीलीय अधिकरण में जुलाई, 2014 से दिसंबर, 2014 तक की 06 महीने की अवधि में कुल 15896 अपीलें दर्ज की गईं एवं 12747 अपीलों का निपटान किया गया। इससे पता चलता है कि सदस्यों की कुल 126 पदों में से 59 पद रिक्त होने के बावजूद भी आयकर अपीलीय अधिकरण में कुशलतापूर्वक तीव्र गति से कार्य संपन्न हो रहा है। आयकर अपीलीय अधिकरण की रांची, कटक, गुवाहाटी और रायपुर पीठ में जहां लंबे समय से सदस्य नहीं थे, उन स्थानों पर दौरे पर पीठें भेजकर बड़ी संख्या में लंबित मामलों को निपटाया गया है। आयकर अपीलीय अधिकरण में अधिकारियों और कर्मचारियों के रिक्त पड़े पदों को भरने का पूरा प्रयास किया जा रहा है। अधिकरण में 48 नए सदस्यों की नियुक्ति के लिए अप्रैल, 2014 से जून, 2014 की अवधि में साक्षात्कार का कार्य पूर्ण किया जा चुका है और नियुक्ति की प्रक्रिया पूरी करके शीघ्र ही उन्हें अधिकरण के विभिन्न पीठों में पदस्थ किया जाएगा।

आयकर अपीलीय अधिकरण में लगभग 03 वर्षों से रिक्त पड़े पंजीकार के पद को भरने हेतु 18.02.2015 को विभागीय प्रोन्नति समिति (DPC) का गठन किया गया जिसमें श्री राजेश्वर प्रसाद को आयकर अपीलीय अधिकरण का पंजीकार नियुक्त किया गया है और उन्होंने दिनांक 25.02.2015 को पदभार ग्रहण कर लिया है। इसी प्रकार अधिकरण में उप पंजीकार के पद, जो एक वर्ष से अधिक अवधि से रिक्त पड़े होने के कारण रद्द कर दिए गए थे, उन पदों का पुनः प्रवर्तन किया गया है एवं उन पदों को भरने का प्रस्ताव संघ लोक सेवा आयोग को अपने मंत्रालय के द्वारा भेजा गया है। इसके अतिरिक्त आयकर अपीलीय अधिकरण में सहायक पंजीकार, कनिष्ठ आशुलिपिक एवं अवर श्रेणी लिपिकों के रिक्त पदों को भरने हेतु मंत्रालय के माध्यम से संघ लोक सेवा आयोग एवं कर्मचारी चयन आयोग को पत्र भेजा गया है।

आयकर अपीलीय अधिकरण में कार्यरत सभी तदर्थ अवर श्रेणी लिपिकों को भी स्थायी किया जा चुका है। इनमें बहुत सारे अवर श्रेणी लिपिक ऐसे भी थे जो 10 वर्ष से भी अधिक अवधि से तदर्थ आधार पर अधिकरण में कार्य कर रहे थे। इसी प्रकार अधिकरण में अनुकंपा के आधार पर बहाली के लिए प्राप्त आवेदनों पर कार्यवाही करते हुए अनुकंपा कोटे में जितने भी पद रिक्त थे, उन्हें भर दिया गया है। अधिकरण में रिक्त पड़े वरिष्ठ हिंदी अनुवादकों के पदों को भी भरने हेतु कर्मचारी चयन आयोग द्वारा प्रक्रिया जारी है।

इस वर्ष 02 अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर पूरे देश में स्वच्छ भारत अभियान प्रारंभ किया गया और आयकर अपीलीय अधिकरण में भी सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने इस दिन स्वच्छता की शपथ ली। इस अवसर पर 01 अक्टूबर, 2014 के आदेश के द्वारा माननीय अध्यक्ष, आयकर अपीलीय अधिकरण ने अधिकरण में लम्बी अवधि से कार्य कर रहे 05 सफाई कर्मचारियों को चपरासी के पद पर स्थानांतरित किया।

आयकर अपीलीय अधिकरण की सभी पीठों का अपना भवन होना आवश्यक है और हमारा यह प्रयास है कि सभी पीठों को सरकारी भवन उपलब्ध कराया जा सके। इस क्रम में आयकर अपीलीय अधिकरण, लखनऊ पीठ के लिए कार्यालय-सह-निवास परिसर के निर्माण हेतु भूमि की खरीद के लिए रु. 17,80,61,400/- + 12% फ्री होल्ड फी + 10% कार्नर फी एंड रजिस्ट्रेशन फी के आयकर अपीलीय अधिकरण के प्रस्ताव को मंत्रालय द्वारा सहमति प्रदान की गई है। आयकर अपीलीय अधिकरण, पुणे पीठ के लिए अकुर्दी, पुणे में अधिग्रहण की गई भूमि की मिट्टी की जांच एवं उस भूमि पर कार्यालय-सह-निवास परिसर के निर्माण हेतु रु. 17,70,50,675/- के प्रस्ताव को भी मंत्रालय द्वारा सहमति प्रदान की गई है। इसी प्रकार मंत्रालय ने बेंगलूरु पीठ, बेंगलूरु के लिए बीटीएम लेआउट, तवारकरे विलेज, बेंगलूरु में भवन निर्माण हेतु रु. 15,07,65,092/- के प्रस्ताव को भी सहमति प्रदान की है। मंत्रालय ने आयकर अपीलीय अधिकरण, रांची पीठ के लिए भी कार्यालय भवन के नवीनीकरण/परिवर्तन एवं बिजली के कार्यों के लिए रु. 57,04,433/- के प्रस्ताव को सहमति प्रदान की है।

इसी प्रकार आयकर अपीलीय अधिकरण द्वारा जयपुर में अधिग्रहण की गई जमीन पर केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, जयपुर द्वारा निर्माण कार्य जारी है जिसके लिए कार्यपालक अभियंता, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, जयपुर को वित्त वर्ष 2014-15 में 13 करोड़ रुपये की राशि प्रदान की गई है। आशा है कि सितंबर, 2015 तक उक्त निर्माण कार्य पूरा हो जाएगा और हमारा कार्यालय नए भवन में स्थानांतरित हो जाएगा।

आयकर अपीलीय अधिकरण, कटक पीठ के कार्यालय भवन और कर्मचारियों के क्वार्टर के निर्माण हेतु राज्य सरकार से जमीन मिल गई है और शीघ्र ही पट्टे के लिए करारनामा (lease agreement) होने वाला है। पट्टे के करारनामे (lease agreement) का काम पूरा होने पर शीघ्र निर्माण कार्य प्रारंभ किये जाने की आशा है। एन.बी.सी.सी. द्वारा निर्मित किदवई नगर, नई दिल्ली में आयकर अपीलीय अधिकरण, दिल्ली पीठ के कार्यालय के लिए स्थान के आवंटन हेतु प्रस्ताव गैर-योजना व्यय समिति के स्वीकृति प्राप्त करने हेतु मंत्रालय को भेजा गया है। इसके अतिरिक्त रायपुर पीठ का कार्यालय जो विलासपुर में स्थित था, उसका स्थानांतरण दिनांक 15.01.2015 से रायपुर में ही कर दिया गया है। माननीय उच्च न्यायालय, पणजी के निर्देशानुसार पणजी पीठ के 02 सदस्यों के निवास के लिए भी 40 हजार रुपये प्रतिमाह की दर पर फ्लैट किराये पर लिया गया है।

आयकर अपीलीय अधिकरण की उन्नति और विकास के लिए अनवरत प्रयास जारी है और मुझे विश्वास है कि आयकर अपीलीय अधिकरण परिवार के सभी अधिकारी और कर्मचारी संगठित होकर इस संस्थान के हित में कठोर परिश्रम और दृढ़ संकल्प के साथ कार्य करते रहेंगे। अंत में, मैं आयकर अपीलीय अधिकरण के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों एवं उनके परिवार के मंगलमय भविष्य की कामना करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उन्हें सुख-समृद्धि प्रदान करें।

श्री डॉ. एस.टी. पावलन के आकस्मिक निधन पर माननीय श्री एच.एल. कारवा, अध्यक्ष, आय.अपी.अधि., द्वारा शुक्रवार दिनांक 26 सितंबर, 2014 को प्रातः 10.30 बजे कोर्ट रूम नं. 1 में श्रद्धांजली देने हेतु फुल कोर्ट रिफरेंस का आयोजना



श्री अरुण साठे, वरि. अधिवक्ता, आयकर अपीलीय अधिकरण, बार एसोसिएशन, श्री अरविंद एच. दलाल, पूर्व अध्यक्ष, भारत का चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान, श्री शिव दयाल श्रीवास्तव, आयकर आयुक्त (विभागीय प्रतिनिधि) एवं अन्य विभागीय प्रतिनिधिगण एवं शुभचिंतक, मुंबई बार एसोसिएशन के सदस्यगण एवं उपस्थित सज्जनों।

आज हम सभी आयकर अपीलीय अधिकरण, मुंबई पीठ और बार एसोसिएशन के सदस्यगण व्यथित हृदय से डॉ. एस.टी. पावलन, न्यायिक सदस्य, आयकर अपीलीय अधिकरण का दिनांक 24 सितंबर, 2014 को हुए आकस्मिक निधन पर, उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए यहाँ एकत्रित हुए हैं।

डॉ. एस. थामिझ मुथर पावलन है अर्थात डॉ. एस.टी. पावलन, न्यायिक सदस्य, का जन्म 20 जुलाई 1970 को कलविककुडी, लागुडी त्रिची जिला तमिलनाडु में हुआ था। इनके 5 भाई हैं और सभी त्रिची में सेटल हैं। इनके पिता श्री जी. साम्यनाथन है। इन्होंने जून 1994 में मद्रास विश्वविद्यालय से द्वितीय श्रेणी में कानून में मास्टर डिग्री प्राप्त की थी। एवं तमिलनाडु डॉ. आंबेडकर लॉ. युनिवर्सिटी से 2008 में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की डिग्री प्राप्त की। डॉ. एस.टी. पावलन 12 जुलाई, 2006 से 31 अक्टूबर, 2012 तक विदेश मंत्रालय में कनिष्ठ विधि अधिकारी के पद पर कार्यरत थे। एवं 01 नवंबर, 2012 को आयकर अपीलीय अधिकरण में न्यायिक सदस्य के रूप में नियुक्त हुए।

उनके परिवार में इनकी पत्नी श्रीमती सी.आर. अनुपमा जी कोयंबतूर तमिलनाडु में वकील हैं एवं पुत्री पी.ए. जयश्री तीसरी कक्षा में पढ़ती है तथा पुत्र पी.ए. सुदर्शन 4 वर्ष

का है। देर से विवाह करने के कारण इनके बच्चे अभी काफी छोटे हैं।

उनके बारे में मैं कहना चाहूँगा कि न तो कभी उन्होंने किसी के खिलाफ कोई शिकायत की और न अधिकरण के किसी सदस्य ने उनके खिलाफ कुछ कहा। जब भी वो किसी से मिलते तो मुस्कराते हुए ही मिलते थे। वो काफी मिलनसार व्यक्ति थे। सभी को एक समान प्यार एवं सम्मान देते थे फिर चाहे सामने वाले व्यक्ति का ओहदा कुछ भी हो। अर्थात चाहे वो व्यक्ति ग्रुप डी का हो या कोई अधिकारी हो सभी को सम्मान देते थे। ईश्वर कितना क्रूर है जो इतनी जल्दी डॉ. पावलन को हमसे छीन लिया। एक मशहूर कवि ने कहा है कि-

“फूल तो खिल के दो ही दिन में बहारे गुलिस्ता दिखला गये हसरत उन गुन्चों पे है जो बिन खिले ही मुरझा गये। “

डॉ. पावलन ने अभी जिंदगी के केवल 44 बसंत ही देखे थे अभी उनके अधिकरण में 18 साल बाकी थे। अभी उन्हें बहुत काम करना था और इस अधिकरण को नई ऊचाइयों तक ले जाने की जिम्मेदारी थी। अभी उनको बड़े से बड़े विवाद को सुलझाना था, निपटाना था और इंसाफ को अंजाम तक ले जाना था। अधिकरण, इंसाफ का मंदिर है ऐसा आप सब कहते हैं। डॉ. पावलन को इस न्याय मंदिर में एक बड़े न्यायधीश की भूमिका निभानी थी, क्योंकि वो युवा थे, होनहार थे और न्यायप्रिय थे। मेरा मानना है कि भारतवर्ष के समोचित न्याय प्रणाली को नया आयाम देने की जिम्मेदारी युवा हाथों में है।

जिंदगी का फलसफा ये भी है कि जिंदगी लंबी नहीं बल्कि बड़ी होनी चाहिए। इतिहास साक्षी है कि कम उम्र में ही

आदमी बड़ा काम कर जाता है। जिस बारे में सर्वश्री विवेकानंद, भगतसिंह, मदनलाल धींगरा और खुदीराम बोस जैसे महान लोगों का नाम हमारे सामने आता है जिन्होंने कम उम्र में ही बहुत अतुल्य काम किया। ये भी यर्थाथ सत्य है कि इंसान का शरीर नश्वर है (Death is Certain)। गीता में लिखा है कि--

**जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्ये-र्थे न त्वं शोचितुमर्हसि॥**

क्योंकि इस मान्यता के अनुसार जन्में हुए की मृत्यु निश्चित है और मरे हुए का जन्म निश्चित है। इससे भी इस बिना उपायवाले विषय में तू शोक करने को योग्य नहीं है। किसी ने कहा है कि जिंदगी बेवफा है और मौत महबूबा है। कहते हैं न कि इंसान के शरीर के अंदर आत्मा बसती है और जब आत्मा शरीर को छोड़ कर चली जाती है --

**न जायते प्रियते वा कदाचि-
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतो-यं पुराणो-
न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥**

अर्थात् यह आत्मा किसी काल में न तो जन्मता है और न ही मरता ही है तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होनेवाला ही है, क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है, शरीर के मारे जानेपर भी यह नहीं मारा जाता।

**वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरो-पराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥**

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है।

अंत में मैं अवश्य कहूँगा कि डॉ. पावलन असमय एवं छोटी उम्र में ही अधिकरण को छोड़ कर चले गये, जबकि उनके इस महान संस्थान जिसे आयकर अपीलिय अधिकरण कहा जाता है को बहुत आवश्यकता थी। आज मैं ये भी अवश्य कहना चाहूँगा कि डॉ. पावलन द्वारा लिखित एवं प्रकाशित फैशलों के अध्ययन से हमें कानून एवं विधि संबंधी मामलों में उनके गूढ़ ज्ञान और मजबूत पकड़ के बारे में पता चलता है। किसी मामले पर निर्णय लेने के लिए उनके द्वारा दिए जाने वाले तर्क, विधि संबंधी दृष्टिकोण मामले की गहराई को समझने की उनकी पूर्णरूपेण समझ आदि से हमें उनकी बहुमुखी प्रतिभा के बारे में ज्ञात होता है। विषय की गहनता और

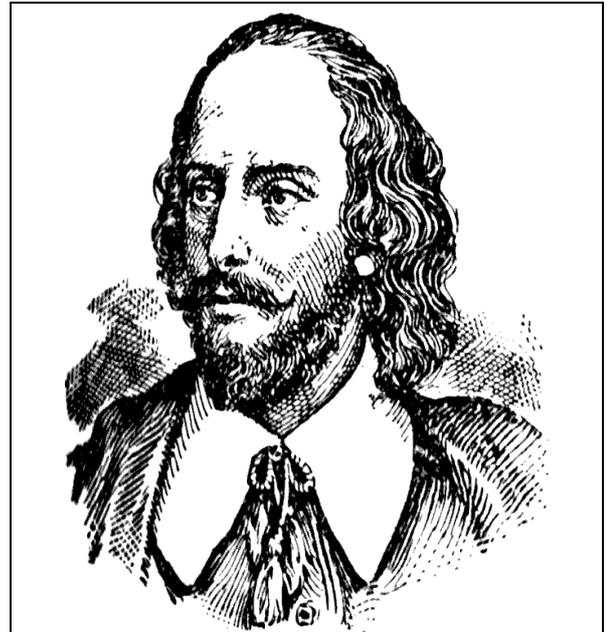
उसके सार को समझने की अलौकिक क्षमता से उनका उत्कृष्ट व्यक्तित्व प्रदर्शित होता है। डॉ. पावलन एक परिपक्व और उत्कृष्ट न्यायाधीश थे। जो मृत्युपर्यंत बेदाग रहे। हम सब लोगों को बहुत कुछ उनसे सीखने को मिलता है और यदि हम उनके जीवन से कुछ सीखें तो यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजली होगी।

डॉ. पावलन के दुखद निधन पर हमें अत्यंत दुःख हो रहा है, हम हृदय की गहराइयों से शोक प्रकट करते हैं एवं दुःख से संतप्त उनके परिवार के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार पर अचानक आ पड़ी इस विपदा से लड़ने की शक्ति प्रदान करें एवं डॉ. पावलन की आत्मा को शांति प्रदान करें।

डॉ. पावलन के आकस्मिक निधन से जो क्षति इस महान संस्था व उनके परिवार को हुई है उसकी पूर्ती नहीं की जा सकती।

इसी नोट के साथ आज की सभा को यहीं समाप्त किया जाता है।



सभी से प्रेम करें, कुछ पर विश्वास करें और किसी के साथ भी गलत न करें ।

- विलियम शेक्सपियर



भोजन और स्वास्थ्य

श्री जोगिन्दर सिंह
न्यायिक सदस्य, मुंबई पीठ

यह सर्वविदित तथ्य है कि हमारा स्वास्थ्य सबसे अधिक हमारे भोजन की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। हम जो खाते या पीते हैं वह हमारे जीवन एवं स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। इसलिए पुरातन समय से हमारे ऋषि-मुनियों ने सात्विक एवं पौष्टिक आहार की आवश्यकता पर बल दिया है। हम सब इस तथ्य से अवगत हैं किंतु आज की भागदौड़ तथा तनावपूर्ण जीवनशैली में हम सबसे अधिक लापरवाह अपने खानपान को लेकर हैं। आज की युवा पीढ़ी ऐसे खाद्य पदार्थों की ओर आकर्षित है जो जल्दी से खाया जा सके और जिसमें केवल स्वाद महत्वपूर्ण है परंतु भोजन की पौष्टिकता तथा सुपाच्यता की ओर कोई ध्यान नहीं देता। फास्ट फूड, चाय, कॉफी, कोल्ड ड्रिंक, चॉकलेट जैसी चीजें हमारे दैनंदिन आहार का हिस्सा बन चुकी हैं जो निश्चित रूप से हमारे स्वास्थ्य के लिए न केवल नुकसानदेह है बल्कि लंबे समय तक इनका उपयोग हमारे जीवन के लिए खतरा बन सकता है।

आज की व्यस्त एवं तनावपूर्ण दिनचर्या में चाय, कॉफी आदि विभिन्न पेय जिंदगी का आवश्यक हिस्सा बन गये हैं परंतु इन पेय पदार्थों के मुख्य घटक कैफीन ने सारे विश्व में तहलका मचा रखा है। यह अत्यंत हानिकारक, स्वास्थ्यघातक रसायन है। इन पेयों के अतिरिक्त भूख-नियंत्रक गोलियां, सिरदर्द की दवाओं, सर्दी-जुकाम तथा एलर्जी अवरोधी औषधियां, शीतल पेयों, जमाए गए दूध से निर्मित विभिन्न आहार, बेकरी, कन्फेशनरी तथा संश्लिष्ट आहारों तथा मिठाईयों में कैफीन मिले होते हैं। इन आहारों के निरंतर प्रयोग से कैफीन के कारण सिरदर्द, अवसाद, चिड़चिड़ापन तथा उत्तेजना पैदा होती है। व्यक्ति अनिद्रा का शिकार बन जाता है। प्रयोगों में देखा गया है कि कैफीन का सेवन बंद करते ही उक्त रोगों के लक्षण समाप्त हो जाते हैं। कैफीन से व्यक्ति व्यसनी बन जाता है तथा इनकी लत लग जाती है। यही कारण है कि उक्त आहार प्रारंभ करने पर छोड़े नहीं छूटता है। यह देखा गया है कि कैफीन तथा मस्तिष्क के संदेशवाहक रसायण एडिनोजिन (transmitters) की संरचना में काफी समानता है। एडिनोजिन के अणु संदेश ग्रहण करने वाली कोशिकाओं में भर जाते हैं। इस स्थिति में मानसिक एवं मस्तिष्क के अन्य कार्य में एक लय-ताल में चलते हैं। इस प्रकार से मस्तिष्क के उद्दीपन-रसायणों में असंतुलन आ जाता है तथा स्नायविक एवं मानसिक कार्य अस्त-व्यस्त हो जाते हैं। मस्तिष्क की कोशिकाएं व्यसनी हो जाती हैं। ये कोशिकाएं कैफीन तथा एडिनोजिन दोनों आत्मसात करने के

लिए तत्पर रहती हैं। कैफीन बंद करने की स्थिति में रक्त कोशिकाओं में एडिनोजिल भर जाता है। फलतः व्यसनी कोशिकाओं में उथल-पुथल मच जाती है, संचार-व्यवस्था अवरुद्ध हो जाती है और रक्तचाप कम हो जाता है। उद्दीपक घटने से सिरदर्द होने लगता है। अवसाद, क्षोभ तथा चिड़चिड़ापन पैदा होती है। कैफीन युक्त पेय लेने से 15 से 45 मिनट के बाद यह खून में प्रवाहित होने लगता है। इसके दुष्परिणाम से एड्रीनल ग्रंथियां उत्तेजक हार्मोन एड्रीनलिन नारएपिनेफिन आदि छोड़ने लगती है। फलतः रक्त में शर्करा का स्तर बढ़ जाता है, रक्तवाहिनियां सिकुड़ने लगती हैं और रक्तचाप 10 से 20 मिमि तक बढ़ जाता है। पेशाब की मात्रा बढ़ जाती है। रक्त में पोटेशियम का स्तर कम हो जाता है। मस्तिष्क की रक्तवाहिनियां सिकुड़ जाती हैं। रक्त में पोटेशियम का स्तर कम हो जाता है। मस्तिष्क की रक्तवाहिनियां सिकुड़ जाती हैं। चयापचय क्रिया तीव्र होने से व्यर्थ ही उर्जा की खपत बढ़ जाती है।

इन पेयों का भयंकर प्रभाव हाइपरएसीडीटी तथा अल्सर के रोगियों पर होता है। कैफीन, गैस्ट्रिक अम्ल तथा अन्य पाचक स्रावों को उत्तेजित कर अम्लता को बढ़ाता है। तीन कप से अधिक काफी पीने वालों में सांस फूलना, तृष्णा, अधीरता, कान बजला, आंखों के आगे अंधेरा छाना, मांसपेशियों में तनाव, तीव्र धड़कन आदि लक्षण दिखते हैं। कुछ आयुर्वेदानिक अपने शोधों से इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि पांच से दस ग्राम कैफीन (करीब 75 कप कॉफी, 125 कप चाय या 200 साफ्ट ड्रिंक) से व्यक्ति की मौत हो सकती है। सितंबर, 1980 से अमेरिका के खाद्य एवं औषधि प्रशासन ने चेतावनी दी है कि गर्भवती महिलाएं कैफीनयुक्त आहारों का उपयोग न करें। इससे गर्भपात हो सकता है और बच्चे विकृत हो सकते हैं। कुछ वैज्ञानिकों ने खोज की है कि कैफीन से मायोकार्डियल इन्फ्रक्शन (हृत्पेशियों में रक्त अवरोध के कारण दौरा) होता है। कैफीन से संतृप्त वसाम्लों, लिपिडस, ट्राइग्लिसराइडस तथा कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ जाती है। हावर्ड स्कूल ऑफ जर्नल ऑफ मेडिसिन के अनुसार प्रतिदिन एक कप कॉफी पीने वालों में नहीं पीने वालों की अपेक्षा दो गुणा, पांच कप पीने वालों में तिगुना अम्लशय, यकृत एवं पिताशय का कैंसर हो सकता है। हालांकि कुछ वैज्ञानिक का मानना है कि कैफीन रहित कॉफी पीने से खतरा कम हो सकता है। परंतु कॉफी को कैफीन युक्त करने के लिए ट्राइक्लोराइडथिलीन तथा मेथिलीन क्लोराइड मिलाए जाते हैं। ये शरीर में उपस्थित कैंसर कोशिकाओं को उत्तेजित करते हैं।

इस प्रकार केवल चाय, कॉफी तथा शीतपेयों का अत्याधिक प्रयोग हमारे स्वास्थ्य पर इतना अधिक विपरीत प्रभाव डालता है। इसी प्रकार अनेक अन्य अस्वास्थ्यकर पदार्थ हमारी सेहत से खिलवाड़ करते हैं। अतः यह अत्यंत

आवश्यक है कि हम अपने भोजन में स्वाद के साथ-साथ इसकी पौष्टिकता एवं सुपाच्यता पर भी पूर्ण ध्यान दें ताकि स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन का उपभोग कर सकें तथा अपने परिवार एवं अपने देश के काम आ सकें क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक जीवन में स्वयं की उपयोगिता कायम रखने के लिए स्वस्थ शरीर और स्वस्थ दिमाग होना आवश्यक है। हमारे पुराणों में इसी वजह से सादा भोजन एवं उच्च जीवन के सिद्धांत पर जोर दिया गया है।



भोजन और स्वास्थ्य

श्री जोगिन्दर सिंह
न्यायिक सदस्य, मुंबई पीठ

आयुर्वेद में अनुपान का महत्वपूर्ण स्थान है। अनुपान का अर्थ है भोजन एवं औषधि आदि के पश्चात सेवन करने योग्य पेय पदार्थ जैसे छाछ, दूध, रस, जल, या मधु आदि। यह रुचि बढ़ाता है तथा भोजन एवं औषधि के पाचन में सहायता करता है। इससे पाचन क्रिया तेज होती है तथा मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। उचित अनुपान सभी दोषों को शांत करने के साथ पुष्टि एवं शक्ति में वृद्धि करता है।

अनुपान के रूप में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख द्रव्य हैं – जल (ठंडा व गरम जल), आसव, सूप, खट्टे फलों का रस, धान्य से तैयार कांजी, दूध, फलों और औषधियों का रस तथा काढ़ा सूप। अनुपान का चुनाव उसके गुण-दोष, रोगी की प्रकृति, आयु व रोग की दशा एवं समय देखकर किया जाता है। इसी तरह अनुपान की मात्रा भी उचित होना आवश्यक है क्योंकि कम मात्रा से पाचन ठीक नहीं होगा जबकि अधिक मात्रा दोषों को बढ़ा सकती है।

आयुर्वेद में कुछ रोगों और विशेष प्रकार के पदार्थों के साथ विशेष अनुपान लेने का उल्लेख किया गया है। इनमें से कुछ निम्न रूप से हैं-

रोगविशेष में व विशिष्ट भोज्य पदार्थों के साथ	अनुपान
कफ का प्रकोप	रूक्ष और गर्म पदार्थों से बने पेय

वात का प्रकोप	स्निग्ध और गर्म पदार्थों से बने पेय
पित्त का प्रकोप	मधुर और शीतल पेय
व्रत, उपवास, शारीरिक श्रम, अधिक बोलने व चलने से उत्पन्न थकावट और कमजोरी आदि में	दूध या घृत, शहद युक्त दूध, आसव आरिष्ट आदि
मद्य सेवन से उत्पन्न दुर्बलता, मोटापा अनिद्रा सुस्ती, चक्कर, शारीरिक थकावट	शहद नींबू मिला गुनगुना जल
असात्म्य (प्रतिकूल) भोजन	गर्म दूध (थोड़ी सोंठ मिलाकर)
रक्त पित्त (शरीर से रक्त स्राव)	दूध गन्ने का रस
विष/ विषैला प्रभाव	हरड़
स्निग्ध पदार्थ (घी, तेल आदि)	गर्म जल
शालि चावल, मूंग और इनसे बने पदार्थ	दूध
उड़द	दही/दही का जल/कांजी
पीठी, पीठी से बने पदार्थ	तेल/यूष(सूप)/खट्टी कांजी
शहद	पानी
दही, खीर, पिष्टान्न	ठंडा या साधारण जल

जल अनुपानों में प्रमुख है तथा सब जगह आसानी से उपलब्ध भी होता है। जल को अमृत का दर्जा दिया जाता है क्योंकि जल के बिना जीवन संभव नहीं है। हालांकि यह आवश्यक है कि हम शुद्ध जल का ही उपयोग करें क्योंकि अशुद्ध जल कई तरह की बीमारियों को उत्पन्न करता है। साधारण और शुद्ध जल पित्त, विषैले प्रभाव, चक्कर, दाह(जलन), अपच, थकान, बेहोशी, नशा और उल्टी को दूर करता है और हृदय को बल प्रदान करता है।

अन्य अनुपानों की तरह जल का सेवन भी सही मात्रा और सही समय पर किया जाना आवश्यक है क्योंकि बहुत अधिक जल पीने से जठराग्नि मंद होती है और पाचन ठीक नहीं हो पाता। इसी तरह कम जल पीने से भी भोजन का पाचन सही तरीके से नहीं हो पाता है तथा अनेक रोग भी उत्पन्न होते हैं। जल का सेवन एक ही बार में बहुत अधिक मात्रा में नहीं किया जाना चाहिए बल्कि बार-बार थोड़ी-थोड़ी मात्रा में करना चाहिए क्योंकि इससे जठराग्नि में भी वृद्धि होती है और शरीर में जल की आवश्यकता की भी पूर्ति होती है। सामान्यतः भोजन से कम से कम ½ घंटा पहले से जल नहीं पीना चाहिए। मोटे शरीर वाले को भोजन के बीच में तथा पतले शरीर वाले को भोजन के ½ घंटे बाद जल पीना चाहिए।

शेष सभी को भोजन के एक घंटे बाद जल पीना चाहिए। दिन में भोजन के बाद छाछ का पान करना चाहिए।

सामान्यतः जल का सेवन प्रत्येक मनुष्य के लिए लाभकारी है परंतु कुछ विशेष रोगों में कम मात्रा में ही जल पीना चाहिए जैसे अरुचि, पुराना जुकाम, क्षयरोग, पाचन शक्ति की कमजोरी, कोढ़ जैसी चमड़ी की बीमारियां आदि में। जल का उपयोग स्थिति के अनुसार किया जाना चाहिए जैसे मोटापा, कफ और वात आदि रोगों में गर्म जल उपयोगी है तो पित्त की स्थिति में ठंडा जल उपयोगी है। इस तथ्य की दृष्टि में विभिन्न प्रकार के जलों की उपयोगिता निम्न रूप से है:-

शीतल जल:- शीतल जल का सेवन मूर्च्छा, पित्त की अधिकता, जलन विषैलापन, रक्तप्रकोप, चक्कर आना, उल्टी आना जैसे रोगों में और भोजन के पाचन में लाभकारी होता है।

गर्म जल:- गर्म जल पीने से पीनस, पेट में अफारा, हिचकी तथा वात आदि रोग शांत होते हैं। उबालने पर आधा बचा जल उष्ण जल कहलाता है और यह त्रिदोष (वात, पित्त और कफ) व उससे उत्पन्न रोगों को दूर करता है। इस जल के सेवन से मूत्र शुद्ध होता है तथा दमा, खासी, ज्वर आदि रोग दूर होते हैं। रात्रि के समय इस जल को पीने से कफ पिघलता है तथा वात एवं मल दोष शीघ्र समाप्त होता है।

प्रातः काल में जल सेवन:- यदि प्रातः काल खाली पेट ही जल पी लिया जाए तो इससे शरीर की झुर्रियां, सफेद बाल, गला बैठना, बिगड़ा जुकाम, दमा, कब्ज तथा सूजन जैसे रोगों में आराम मिलता है।

विभिन्न ऋतुओं में उपयोगी जल:- ग्रीष्म और शरद ऋतुओं में उबालने पर एक चौथाई बचा जल उपयोगी होता है। हेमन्त, शिशिर, वर्षा और वसंत ऋतुओं में उबाल कर आधा बचा हुआ जल उपयोगी होता है।

दूषित जल: जिस जल में मिट्टी, कीचड़ काई, तिनके, पत्ते, जीव जंतुओं व कीट पतंगों के मल-मूत्र, अंडे व मच्छर, मक्खी व विषैले पदार्थ मिला हो वह जल तो दूषित होता ही है और इसके अतिरिक्त जो जल गन्दला या मैला हो, जिसमें किसी तरह का रंग, स्वाद या गंध हो, वह जल भी दूषित होता है। बिन मौसम की वर्षा का तथा वर्षा के एकदम बाद भूमि पर से इकट्ठा किया गया जल भी दूषित होता है। दूषित जल के सेवन से चर्म रोग, जठराग्नि के रोग, कब्ज, दस्त उल्टी, पेट में जलन आदि रोग हो सकते हैं। अतः जल हमेशा शुद्ध करके ही पीना चाहिए।

नारियल का पानी: यह मधुर स्वाद वाला, सिग्न्ध, बलदायक और पाचन में हल्का होता है। यह अधिक प्यास, पित्त, वात

एवं जिगर की गर्मी को दूर करता है, पाचन अग्नि को बढ़ाता है और मूत्र प्रणाली के सभी अंगों को शुद्ध करता है। अतः सभी ऋतुओं विशेषकर ग्रीष्म ऋतु में दूसरे पेय शीत पेयों के स्थान पर इसका उपयोग करना चाहिए।

जल के अतिरिक्त दूध, दही, घी, मधु आदि का भी आवश्यक मात्रा में नियमित रूप से सेवन करना उपयोगी है। अतः सभी पदार्थों के गुण-दोष को जानकर उपयोगी पदार्थों का ही सेवन करें और जो पदार्थ हमारे अनुकूल नहीं है, उनका सेवन छोड़ दे ताकि हम स्वस्थ और लंबी जिंदगी जी सके।



अधूरा सांस

श्री हरभजन सिंह सिद्धू,
न्यायिक सदस्य, दिल्ली पीठ

जिंदगी, पल की, न दो पल की, न दिन की, न चार दिन की।
यह तो एक सांस की है, यह भी अधूरा है।

बेवफा कहते हैं अक्सर दुनिया को।
सबसे बड़ी बेवफा जिन्दगी अपनी।
न वक्त बताती है आने का, न बताती है अपने जाने का।
फिर भी हम प्यार करते हैं इसको।
अपनी यह भूल नहीं तो और क्या है?

हमने कभी जाना नहीं – जिंदगी क्या है,
अगर हम जान गए, फिर मान गए, जिंदगी क्या है,
फिर न खाएंगे धोखा जिंदगी तुमसे।
फिर तुम देखना इस जिंदगी को, हर एक सांस से बरसेगी
खुशियां।
अगर यह जान गए और मान गए,
कि जिंदगी, पल की, न दो पल की, न दिन की, न चार दिन
की।
यह तो एक सांस की है, यह भी अधूरा है।

सुविचार

**‘इंसान’ एक ‘दुकान’ है और जुबान उसका ताला!
ताला खुलता है, तभी मालूम होता है कि दुकान सोने
की है या कोयले की!**



हम झूठ बोलते हैं

श्री हरभजन सिंह सिद्धू,
न्यायिक सदस्य, दिल्ली पीठ

हम पूछते हैं कि तेरा हाल क्या है?
अच्छा है। आप बताए – कैसे हो?
एक दिन खुद ने खुद से पूछा- 'बता, तेरा हाल क्या है?'

खुद ने खुद को जबाब दिया,
मैं तो सदियों से बीमार हूँ, तुमने पूछा ही नहीं !
खुद को खुद से शर्मिंदा होना पड़ा !

उस दिन खुद ने खुद से कसम खाई
कि पहले करूंगा अपना इलाज, पहले करूंगा अपना इलाज,
फिर पूछूंगा तेरा हाल.....
"क्योंकि हम तो झूठ बोलते हैं!"



स्थानांतरण

श्री कौशल कुमार
सहायक पंजीकार, कोलकाता

सरकारी नौकरियों में स्थानांतरण एक सुधारात्मक प्रक्रिया के रूप में शुरू किया गया था परंतु धीरे-धीरे केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार की नौकरियों में इसका दुरुपयोग होने लगा। अंग्रेजों के शासन काल में कुछ भ्रष्ट अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सुधरने का मौका देने के लिए एक जगह से दूसरी जगह स्थानांतरित किया जाता था और स्थानांतरण का मूल मतलब भी यही है कि विभागों में पारदर्शिता बनी रहे।

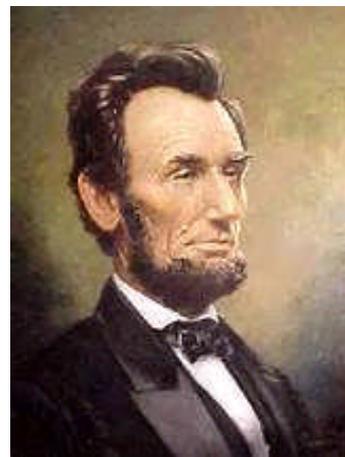
समय बीतता गया और स्थानांतरण का दुरुपयोग भी इसी तरह समय के साथ-साथ बढ़ता गया। हमारे राजनेता अपने मनपसंद अधिकारियों/कर्मचारियों को अपने साथ रखने के लिए बेहिचक, जब चाहते हैं स्थानांतरण करने वाला बाबू या संबंधित अधिकारी इनके लिए चुगलखोरी करने से भी बाज नहीं आते थे। बड़े अधिकारियों के स्थानांतरण की बात समझ में आती है परंतु छोटे कर्मचारियों का स्थानांतरण एक राज्य से दूसरे राज्य में होने पर उसे क्या परेशानी होती है यह कोई नहीं समझता है। कभी-कभी तो कर्मचारी की आकरिमक

मृत्यु हो जाती है या मानसिक अवसाद के कारण आत्महत्या भी कर लेता है। स्थानांतरण में विशेष ध्यान देने की बात यह कि कोई नियोक्ता खुद किसी का स्थानांतरण नहीं करता है। इस सभी कार्यों के लिए चमचो की एक चेन काम करती है। जो बहुत ही शांति और सुनियोजित तरीके से अपने कार्य को अंजाम देता है। यही चमचे अपने स्वार्थवश बड़े अधिकारियों का कान भरते हैं और लोगो का स्थानांतरण करवाकर बेवजह परेशान करते हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि चमचो की सिफारिश पर ही स्थानांतरण होता है, नियोक्ता की मर्जी से नहीं।

इस लेख के माध्यम से मैं उन दयालु हृदय वाले नियोक्ताओं तक अपनी बात पहुंचाने की कोशिश करना चाहूंगा कि छोटे कर्मचारियों के स्थानांतरण के समय काफी सूझ-बूझ से काम लिया जाना चाहिए। विशेष रूप से गुप सी एवं गुप डी कर्मचारियों का स्थानांतरण एक राज्य से दूसरे राज्य में अगर बहुत जरूरी न हो तो होना ही नहीं चाहिए। इनकी पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं होती कि अपने पैतृक स्थान पर अपने माता-पिता, भाई-बहन तथा नौकरी के स्थान पर पत्नी एवं बच्चो का पालन पोषण कर सकें।

यदि बहुत ही आवश्यक हो तो इन्हे एक-दो माह के लिए बारी-बारी से दौरा पर भेजा जा सकता है और अच्छे ढंग से कार्य करवाया जा सकता है।

यदि उपरोक्त बातों को ध्यान में रखा जाए तो किसी का परिवार टूटने से बचाया जा सकता है और उन कर्मचारी के बच्चों की शिक्षा-दीक्षा सुचारू रूप से हो सकती है तथा साथ ही सरकारी कार्य भी सही समय पर और सही तरीके से निपटाया जा सकता है।



चरित्र एक वृक्ष है और मान एक छाया। हम हमेशा छाया की सोचते हैं; लेकिन असलियत तो वृक्ष ही है।

- अब्राहम लिंकन



कहानी

श्री कौशल कुमार
सहायक पंजीकार, कोलकाता

पुराने समय की बात है। खैरागढ़ के जमींदार बाबू शिव चरण लाल श्रीवास्तव इलाके के जाने माने गणमान्य व्यक्ति थे। भगवान ने उन्हें दौलत-सोहरत सब कुछ दिया था। चारों तरफ दूर-दूर के इलाके में उनका नाम था। उनकी 12 गांवों में खेती थी। हाथी-घोड़े सभी थे। बाबूजी जैसे ही धनवान थे जैसे ही दयालु भी थे। किसी भी गरीब की सहायता करना उनके जीवन का उद्देश्य था। गरीबों को प्रत्येक रविवार को भोजन एवं वस्त्र वितरित करते थे। बाबूजी का विवाह उसी इलाके के पड़ोसी जिले के जमींदार की बेटी सुकन्या से हुआ था। बाबूजी की उम्र 35 वर्ष तो सुकन्या की उम्र 25 वर्ष थी। बाबूजी उम्र में सुकन्या से 10 वर्ष बड़े थे परंतु देखने में दोनों बहुत सुंदर लगते थे। इलाके के सभी लोग उन्हें प्यार करते थे। बाबूजी को 02 लड़के और 01 लड़की थी। बहुत प्यार से बाबूजी ने बड़े लड़के का नाम रामकुमार एवं छोटे का कृष्णकुमार रखा था। बेटी का नाम लक्ष्मी था। धीरे-धीरे समय बीतता गया। बाबूजी भी अब 50 के हो गए थे।

समय बीतता गया। उम्र बढ़ती गई। दोनों बेटे एवं बेटी बड़े होकर अपनी पढ़ाई पूरी कर चुके थे। अब शादी विवाह का समय था। बाबूजी ने बड़े प्यार से दोनों बेटों की शादी की और अब बेटी की शादी भी खोज रहे थे। बड़ी बहू बहुत ही सुंदर थी। छोटी बहू भी उससे किसी माने में कम नहीं थी।

समस्या किस कोने से झांक रही है यह कोई देख नहीं पाता। वही बाबूजी के साथ भी हुआ। बाबूजी ने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मिनटों में उनकी सारी संपत्ति लुट जाएगी। जमींदारी उन्मूलन अधिनियम लागू हुआ और बाबूजी की खेती का अधिकांश भाग जमींदारी उन्मूलन की भेंट चढ़ गया। हालांकि बहुत सारे जमींदार अपनी खेती को परिवार के अन्य सदस्यों के नाम करके अपनी जमीन बचा लिए परंतु बाबूजी को यह पसंद नहीं था। वे उसूल के पक्के थे। बेटा-बेटी सभी ने समझाया परंतु उन्होंने किसी भी नहीं सुनी।

धीरे-धीरे गरीबी का आगमन होने लगा। दुर्भाग्य से अगले साल सूखा पड़ गया जो रही सही थी वह भी पूरी हो गई। बाबूजी पूरी तरह टूट गए। धीरे-धीरे हाथी-घोड़े बिक गए। नौकर-चाकर सब छूट गए। दोनों बेटे नौकरी पाकर शहर चले गए। अब घर में बाबूजी, मालकिन और बेटी लक्ष्मी मात्र तीन लोग ही रह गए। घर की दशा और भाइयों तथा भाभी की घर

के प्रति बढ़ती बेरुखी देख कर लक्ष्मी का दिल पसीज गया। वह मां-बाप को कैसे छोड़ सकती थी। लक्ष्मी जो अब 25 वर्ष की हो चुकी थी, उसने अपनी शादी न करने की ठान ली।

अब लक्ष्मी बूढ़े मां-बाप की सेवा करती। घर में धन का अभाव तो था ही, खाने को कहां से आता। अंत में जमींदारी का लाज छोड़कर लक्ष्मी ने छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। थोड़ा बहुत पैसा आने लगा। अब घर में खाने-पीने की तकलीफ नहीं थी। दोनों बेटे मां-बाप की खबर नहीं लेते थे। वे अपने-अपने परिवार में व्यस्त थे। जैसे उनकी आय भी बहुत कम ही थी। परंतु उन्हें नालायक ही कहा जाएगा। लक्ष्मी की उम्र भी बढ़ रही थी। मां-बाप को उसकी शादी की चिंता सता रही थी। उसी समय एक चमत्कार हुआ। रामपुर एस्टेट के जमींदार किसी काम से खैरागढ़ आए थे। उन्होंने बाबूजी के घर रात रुकने की इच्छा जाहिर की तो बाबूजी ने स्वीकार कर लिया। उन्होंने लक्ष्मी के सदगुणों को देखकर काफी प्रसन्नता जाहिर की और अपने लड़के से शादी का प्रस्ताव रखा जो बाबूजी ने मंजूर कर लिया। परंतु लक्ष्मी की एक शर्त थी कि वह मां-बाप को नहीं छोड़ेगी।

क्रमशः



अविस्मरणीय पर्यटन स्थल –
कश्मीर

श्री दुर्गेश सावरट्कर
कार्यालय अधीक्षक, मुंबई पीठ

कश्मीर “भारत का नंदनवन” जिसकी अनुपम सुंदरता का बखान कवियों/लेखकों ने किया है उसे देखने का सौभाग्य मुझे मिला, निसर्ग सौंदर्य से भरे कश्मीर को देखकर मैं दंग रह गया। “स्वर्ग” यह कल्पना काल्पनिक है परंतु अगर धरती पर कही स्वर्ग है तो वह सिर्फ कश्मीर में है, ऐसा मुझे लगता है। दो बड़ी पर्वत श्रृंखलाएं, ग्रेट हिमालयन श्रृंखला और पीर पंजाल उत्तर तथा दक्षिण दिशाओं से इसे घेरती हैं जिसमें कई बड़ी पर्वतश्रेणियां हैं जो 3000 से 6000 मीटर या उससे भी अधिक ऊंची हैं। यह पर्वतीय क्षेत्रों, घाटियों और पर्वतीय झीलों का प्रदेश है। यही नहीं यहां नदियां, झीलें, दरें, ग्लेशियर, पठार और मैदान हैं। पहाड़ी झरनें और कल-कल बहती धाराएं तथा निर्मल जल से भरपूर सिंधु, चेनाब, झेलम और रावी नदियां हैं। श्रीनगर जम्मू-कश्मीर की राजधानी तथा

राज्य का सबसे बड़ा नगर है जो झेलम नदी के दोनों तट पर बसा हुआ है। कश्मीर में सब जगह बहता “झेलम” नदी हर वक्त पानी से लबोलब भरा दिखाई देती है, जिसका साफ सुंदर रूप मनुष्य को मोह लेता है, और भी नदियां उसमें आकर मिलती हैं जो आगे जा कर पाकिस्तान में बहती है। जम्मू-कश्मीर हर मौसम में सैलानियों के लिए एक अनुकूल सैरगाह है क्योंकि हर मौसम में इसका बदला स्वरूप इसे एक अलग सौंदर्य प्रदान करता है।

मुगलो द्वारा वादी-ए-कश्मीर में बनवाए गए उद्यान विशेष आकर्षण का केन्द्र है। इसमें शालीमार बाग सबसे भव्य और सुंदर है जिसे मुगल बादशाह जहांगीर ने बनवाया था। यहां के मुगल गार्डन जैसे शालीमार बाग और निशांत बाग रंग-बिरंगे फूलों से और खूबसूरती से भरा पड़ा है जहां हर रंग के फूल, बीच में से बहते झरने/फौवारे गार्डन की शोभा बढ़ाते हैं। इन बगीचों में ऊंचे घने चिनार के पेड़ इनकी खूबसूरती को और बढ़ाते हैं। निशांत बाग डल झील के किनारे जबरवान पहाड़ियों के नीचे बसा है। यहां से झील का बेहद खूबसूरत नजारा देखा जा सकता है। मुगल गार्डन में से तो हमारे पैर मानो निकलने के लिए राजी ही नहीं थे, यहां की खूबसूरती आंखों में बसाकर बड़ी मुश्किल से हम आगे की तरफ बढ़ें। इसके आगे हमें चश्मेशाही जाने का मौका मिला वहां अतिशय सुंदर पेड़, फूल थे और बीच में चश्मेशाही का झरना बहता था। इसका पानी बहुत ही मीठा और ठंडा था। इसी से पता चलता है कि हमारे पंतप्रधान पंडित जवाहर लाल नेहरू हमेशा चश्मेशाही का पानी क्यों पीते थे। उनके लिए रोज यहां से पीने के लिए पानी हेलिकॉप्टर द्वारा क्यों जाता था। मुगल गार्डन किसी परीकथा में वर्णित बगीचे की भांति सुंदरता समेटे हुए है।



आज तक मैंने दूर से बर्फीले पहाड़ टेलिविजन या सिनेमा में देखा था मगर सोनमर्ग में जाकर पहली बार उस नजारे को अपनी आंखों से देखा। वहां की हर पहाड़ी बर्फों से लदी थी और उसका दृश्य इतना मनमोहक की हर कोई अपने-अपने कमरों में इसकी तस्वीर ले रहा था। वहां बर्फ में

खेलने का मजा कुछ और ही था वहां भी हमें ऐसा लगता था कि बस ही खेलते रहे वहां से आते हुए रास्ते में चिनार के पेड़, देवदार के पेड़, काफी उची झाड़ियां, आंखों को ठंडक पहुंचाती और वहां की हरियाली सुखद आनंद दे रही थी। ऐसा लगता मानो वह सब पेड़ कतार में खड़े होकर पर्यटकों का स्वागत कर रही है।

“गुलमर्ग” जब हम गुलमर्ग पहुंचे तो वहां बहुत ही ठंड थी। वहां की बर्फों भरी पहाड़ी देखने के लिए हमें (Gandola Ride) यानि रोप से जाना पड़ा। रोप से जाते हमने देखा बर्फों से ढकी पहाड़ी मानो ऐसे लगता था हम हिमालय ही पहुंच गये हैं। पहाड़ी पर पहुंचने पर वहां की खूबसूरती ने हमें मोह लिया और थोड़ी देर में बर्फ गिरने लगी (स्नोफॉल होने लगा)। तब हमें वहां खेलने में और भी मजा आया। वहां का सफेद बर्फ जैसे रूई उपर से गिर रहा हो। यह दृश्य सभी लोग अपने कैमरे में बंद कर रहे थे। गुलमर्ग की सुंदरता अतुलनीय है और इसके बर्फ से ढके ढलान पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। आइस स्केटिंग, गोल्फ की पहाड़ियों और गोल्फकोर्स के लिए गुलमर्ग विश्व में प्रसिद्ध है।

इसके बाद हमलोग पहलगांव गये। वहां बहुत ही ठंड थी। वहां की बर्फीले पहाड़ और उपर से देखने लायक पहलगांव वैली अतिशय सुंदर और मनमोहक थी। लिद्धर नदी और शेषनाग झील से आती धारा के संगम के निकट बसे पहलगाम में पहुंचे पर्यटकों का साक्षात्कार प्रकृति के अद्वितीय रूप से होता है। यहां आश्चर्य जनक ट्रेकिंग, स्कासइंग, पर्वतों पर चढ़ाई और कैम्पिंग के स्था न हैं।

कश्मीर के लोगो का व्यवसाय और उपजीविका का साधन यानि “पर्यटन” । इसलिए वहां के लोग अतिथि का बहुत ख्याल रखते थे और बहुत ही अच्छा स्वागत करते थे मानो “अतिथि देवो भव” । कश्मीर में डल लेक (Dal lake) में काफी सारे हाउसबोट थे। हमें भी हाउसबोट में एक रात रहने का मौका मिला वहां के हाउसबोट देखकर हमलोग दंग रह गए। मानो किसी राजगृह में आए हो। वहां के लोगो ने हमारा बहुत ही अच्छा स्वागत किया। बोट सारी सुख-सुविधाओं से युक्त था। और वहां ठंड इतनी थी कि ठंड से बचने के लिए उस बोट में हिटर का इंतजाम था। वहां हमने शिकारे में घुमने का आनंद लिया। यह अनुभव कुछ अलग ही था। शांत डल लेक पानी उसमें तैरता शिकारा और हाउस बोट बहुत ही मनमोहने वाला दृश्य था। तरह-तरह की वनस्पतियां, कमल के फूल, पानी में बहती कुमुदनी जल की सुंदरता में चार चांद लगा देते हैं।

इसके बाद हम खीरभवानी मंदिर पहुंचे जहां हमने माता का दर्शन किया खीर भवानी यानि माता का वह रूप जो बचपन में जब माता खीर सेवन करती थी। वहां लोग दूध

चढाते थे और देखा गया है कि रात 12 बजे माता खेलती है उस दूध भरे हौद का दूध अपने आप हिलने लगता है। वहां से हमें श्री शंकराचार्य मंदिर ले जाया गया यह मंदिर पहाड़ों पर है। जहां मंदिर जाने के लिए 350 सीढ़ियां चढनी पड़ती हैं। लेकिन उपर जाने पर भगवान के दर्शन लेते ही सारी थकावट दूर होती है और वहां से नीचे का जो सारा श्रीनगर शहर दिखता है वह बहुत ही मनोहारी है। और उपर ठंड भी बहुत है। इसलिए थकावट का नामोनिशान भी नहीं रहता।

कश्मीर वनस्पतियों और पौधों के मामले में भी बेहद समृद्ध है। खूबसूरत चिनार पूरी घाटी में पाया जाता है। इसके अलावा सिर उठाए खड़े देवदार के वृक्ष जिनके साथ हैं पाइन और फर। श्रीनगर में आखरोट और बादाम के पेड़ और केशर के बाग भी देखने को मिले। सेब और चेरी के बागान, शिकारे की सवारी, हाउसबोट और कश्मीरी हस्तशिल्प इस जगह के सौंदर्य को और भी अधिक अद्वितीय और आकर्षक बना देते हैं। सच है कश्मीर के वादियों में आप जाएं, जन्म ही जन्म है। भगवान की निसर्ग की कृपा लगता है सिर्फ कश्मीर पर ही है।



सोसायटी पिकनिक

आर.आर. वानखेड़े
सहायक पंजीकार, नागपुर

आयटीएटी एम्पलॉयज को-ऑप क्रेडिट सोसायटी की ओर से सेक्रेटरी द्वारा जुलाई, 20 को एक परिपत्र निकाला गया। जिसमें सोसायटी की रजत जयंती मनाने के लिए 22 जुलाई 2006 दिन शनिवार निश्चित करते हुए पिकनिक मनाने के लिए रॉयल क्लासिक रिसार्ट, वाघोने, वागेश्वरी मंदिर रोड, नालासोपारा(पश्चिम) यह स्थान घोषित किया गया। मैंने जब यह सर्कुलर पढ़ा तो मन में पिकनिक का आनंद लेने का विचार आया। सर्कुलर ध्यान से पढ़ने पर देखा कि पिकनिक जाने के लिए सोसायटी की प्रबंधन समिति ने सोसायटी के सभासदों के लिए दो लकजरी बसों की व्यवस्था की है। ये दोनो बसें दादर(पूर्व) के श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर के पास से सुबह 7.30 बजे छूटने वाली थी। यह सब पढ़कर मन खुशी से झुम उठा।

वह शुक्रवार का दिन था। दिन भर कार्यालय में काम करते समय अन्य सहकर्मी कल शनिवार के पिकनिक

की चर्चा कर रहे थे। मैं भी उनमें शामिल होकर सुझाव दे रहा था। पिकनिक में जाते समय बस में कुछ गाना बजाना करना था इसलिए हममें से एक ने बोगो (वाद्य) लाने का वादा किया। फिर क्या देखना, हम सब पहले दिन से ही बड़ी उत्सुकता से पिकनिक की तैयारी में लग गए। शाम को कार्यालय से छूटने के बाद घर जाते समय हम सब एक दूसरे को हिदायत दे रहे थे। अरे, तुझे ये लेना है, तुझे वो लेना है, देर से मत आना, बस समय पर छूट जाएगी, शार्प 7 बजे पहुंच जाना। इन सब सूचनाओं के साथ हम सब कल शनिवार की पिकनिक के ख्यालों में बंधकर अपने अपने घर गये। मैं भी चर्चगेट से अंधेरी और अंधेरी से बस पकड़कर घर पहुंचा। गेट पर चौकीदार ने सलाम किया तब मैंने उसे मुस्कराते हुए कहा कि कल सुबह मुझे जल्दी जगाने के लिए थोड़ा डोर बेल बजा देना।

रात 11 बजे तक तो केवल पिकनिक की बातें मन में आ रही थी, सुबह जल्दी उठना है, यह मन में ठानकर सो गया। मैं हमारे कंप्लेक्स के चौकीदार का शुक्रगुजार हूँ कि जिसने चार बार बेल बजाकर मुझे जगाया तब सुबह के 5.30 हो रहे थे। नित क्रियाक्रम से निपटकर नहा-धोकर तैयार होने में मुझे एक घंटा लगा। तैयार होकर घर से निकला तो घड़ी में 6.45 हो गए थे और मुझे बस पकड़कर अंधेरी स्टेशन जाकर लोकल से दादर जाना था। मैंने सोचा अब मैं बहुत लेट हो चुका हूँ और शायद पिकनिक बस नहीं पकड़ पाऊंगा। घर से मरोळ मरोशी बस स्टाप पर आया तो बस आने में और पांच मिनट लग गए। बाद में बस से 20 मिनट में अंधेरी स्टेशन आया और वहां से लोकल पकड़कर ठीक 7.45 दादर स्टेशन(वे) में उतरकर दादर में बस छूटने के निर्धारित स्थान लक्ष्मी नारायण मंदिर पहुंचा। जब देखा कि अन्य मित्र वहां खड़े हैं और बस भी खड़ी है तो चैन की सांस ली। दो तरफ दो लकजरी बसें खड़ी थी। मैंने पहले ही तय कर लिया था कि जिस बस में मेरे मित्रगण जो गाने बजाने का प्रोग्राम करने वाले थे और बोंगो साथ में लाए थे, उन्ही के साथ सफर करूंगा। और मैं उस बस में बैठ भी गया। लेकिन मेरे दूसरे करीबी मित्र बस में आए और उन्होंने निर्देश दिया कि इस बस में न बैठकर दूसरे बस में बैठे और हमें दूसरे बस में भेज दिया। उस वक्त मेरा मन उदास हो गया। मैं जिस उत्साह के साथ पिकनिक का आनंद उठाने की मंशा के साथ पहले बस में बैठा था, वह निरूत्साह में बदल गया। दूसरी बस में मेरा मन नहीं लग रहा था। कुछ ही क्षणों में बस छूट गई। मैं अमुमन बैठ गया लेकिन मुझसे रहा नहीं गया। मैंने बस में जोर से आवाज लगाकर मेरे मित्र से विनती की कि मुझे उस बस में सफर करना है, मुझे जाने दो। पहली बस पीछे से आ रही थी। मेरे मित्र के मन में थोड़ी दया आ गई। उन्होंने पीछे से आती बस को रूकवाकर मुझे उसमें जगह दिलवा दी। मेरे अन्य मित्र जो पहली बस में मेरा इंतजार कर रहे थे मुझे देखकर आनंदित हो उठे और हुर्र-हुर्र की जोरदार आवाज लगाकर मेरा स्वागत किया। बस

अपने गणतन्त्र की ओर चल पड़ी। कुछ ही क्षणों में हमारी टोली के मनचले सदस्यों ने गाना बजाना शुरू किया। सबसे पहले उन्होंने हमारे अराध्यदेव श्री गणेशजी की वंदना भजन के रूप में गाई। उनके साथ शामिल होकर मैं भी गाने लगा। गणेश वंदना समाप्ति के बाद फिर शुरू हुआ हमारा मौज मस्ती भरा पिकनिक सांग का दौर। जिसमें वैती ने बहुत रोमांटिक सांग गाया। उसका गाना खत्म होने से पहले ही सुधीर बिर्जे ने गाना शुरू कर दिया। सुधीर का गाना अभी आधा ही हुआ था कि महेन्द्र ने अपना लोकगीत शुरू कर दिया। सभी मित्रगण गाने में उत्साह के साथ कोरस कर रहे थे। बोंगो पर थे मिस्टर आनंद कदम। उनका बोंगो इस तरह बज रहा था मानो कसा हुआ आर्कस्ट्रा प्लेयर रिदम बिट्स दे रहा हो। अभी गाने-बजाने का दौर जारी ही था कि बीच में एक कव्वाली पेश हुई- “आज जवानी पर इतराने वाले कल पछताएंगे चढता सूरज धीरे-धीरे ढलता है ढल जाएंगे”। हमारी इस मौज मस्ती में हमारे डीडीओ साहब भी जवान चुस्त मनमौजी लड़को की तरह शरीक हो गए और उन्होंने भी बहुत आनंद उठाया। यह वो क्षण था जो मैं आजीवन नहीं भूल पाऊंगा।

मुंबई की भाग दौड़ भरी जिंदगी में कुछ पल हमारे लिए खोजना हो तो हमें सचमुच मुंबई के बाहर निकलना होगा। इस जीवन के सफर में सुख-शांति की तलाश करते-करते हमारा काफी समय बीत चुका है। हमारा सफर करना बंद भी हो सकता है लेकिन जिंदगी को हर पल नई उमंग के साथ जीना हमारी इच्छा शक्ति होनी चाहिए। और इस इच्छा शक्ति को बरकरार रखने के लिए हमें कुछ ऐसे साधनों की आवश्यकता होती है जिससे हमारी जिंदगी एक सुहाना सफर बन जाए। हमारे मित्र, जो दूरदर्शी, सरलस्वभावी, मृदुभाषी और दूसरों की मदद करने वाले हैं, उन्हीं के प्रयास और साहसिक कदम से इस पिकनिक का आयोजन हुआ था। साहसिक कदम इसलिए कहूंगा कि कार्यालय में भिन्न-भिन्न विचारधारा के, स्वभाव के लोग कार्यरत हैं जो सोसायटी के सदस्य भी हैं और करीब-करीब सौ लोगों को पिकनिक पर ले जाना यह कोई सहज काम नहीं। मुझे यह कहते हुए कोई हिचक नहीं हो रही है कि कार्यालय के कुछ मित्रों द्वारा पिकनिक को पोस्टपांड करने का भी सुझाव दिया गया था। इतना ही नहीं भिन्न-भिन्न कारण देकर उनका मन विचलित करने का भी शत-प्रतिशत प्रयास कुछ मित्रों द्वारा किया गया। लेकिन सभी को पिकनिक का महत्व और उसका उद्देश्य समझाने के बाद पिकनिक को अंतिम अंजाम देकर उसे सुनिश्चित किया गया।

पिकनिक बस धुंआधार बारिश को चिरती हुई आगे बढ़ रही थी। बारिश का मौसम होने से और जुलाई का महीना होने से वरुण देवता बड़ी प्रसन्नता से मुक्त हस्त से धरती मां की तपन को शांत कर रहे थे। मुझे याद है पिछले साल इसी माह की 26 तारीख को वरुण देवता मुंबई पर कोपमान होकर

वर्षा रूपी अस्त्र से हाहाकार मचाया था। उनके इस रौद्र वर्षा तांडव की वजह से भीषण कोहराम मच गया और भारी मात्रा में जान माल की हानि हुई। लेकिन उस महा भयंकर त्रादसी को अतीत में भूलकर हम नए वर्तमान की ओर मार्गक्रम करने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस पिकनिक को एक माध्यम बनाकर हम जिंदगी के कुछ लम्हे हंसी-खुशी से जीने की उम्मीद में इस सफर के मुसाफिर बने हुए थे। मन में तरह-तरह के विचार आ रहे थे कि बस एक झटके के साथ रुक गई। यह स्थान बोरीबली के आसपास का था। रास्ते में कोई साथी चढ़ने वाला था। वहां से और थोड़ी देर चलने के बाद हम हमारे पिकनिक स्पॉट यानि रायल्स क्लासिक रिसार्ट के द्वार पर हम पहुंचे थे। इस वक्त रिम-झिम हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। झरनों से बहता पानी और उस परिसर की हरियाली देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। हमारे पिकनिक स्पॉट तक का सफर कैसे खत्म हुआ पता ही नहीं चला, जो हम सब मस्ती में झूमते गाते-बाजते हुए पहुंच गए।

रॉयल क्लासिक रिसार्ट को बड़े ही सुनियोजित एवं आकर्षक तरीके से बनाया गया था। बाहर से प्रवेश करते समय सामने दो, दोमंजिल भवन हैं जिसमें शायद पर्यटकों के रुकने की व्यवस्था की जाती है। इन दो भवनों के बगल में पर्यटकों के खान-पान की व्यवस्था की जाने वाला हालनुमा बड़ा होटल है। आगे एक गेट बना है और उस गेट से अंदर जाने के बाद ही रिसोर्ट का असली मनोहारी रूप सामने आता है। अंदर प्रवेश करते ही हमें एक स्विमिंग पूल देखने को मिला। यहां पर्यटकों को स्विमिंग का आनंद उठाने के लिए डीजे साउंड सिस्टम लगा था। उसके बाद और एक गेट था जिसमें आगे जाने पर एक कॉमन हॉल था जहां सोसायटी की मिटिंग की व्यवस्था की गई थी। वहां दो सौ लोगों के कुर्सी लगाकर बैठने और माइक साउंड आदि की व्यवस्था थी। वहां से थोड़ा और आगे जाने पर हो हाल, बाजू में गार्डन जैसी जगह और उचाई तक उड़ता फव्वारा और साथ में एक स्विमिंग पूल जो केवल स्त्रियों के लिए आरक्षित था। वहां का जो दृश्य था, निसर्ग रम्य परिसर, हरियाली से ओत-प्रोत, और बारिश की वजह से उस परिसर के रास्तों से झरनों की तरह बहता पानी, जो निश्चित ही हमारे मन को भाव-विभोर कर रहे थे। यह सब दृश्य देखकर मन बहुत प्रसन्न हो उठा। अभी मैं इन सब चीजों का आनंद ही ले रहा था कि हमारे आयोजक ने सबको सूचित किया कि सभी अपना सामान सामने के दो हाल में रखकर सर्वप्रथम सोसायटी की वार्षिक सर्वसाधारण सभा के लिए उस हाल में एकत्रित हो जाएं जहां मिटिंग की व्यवस्था की गई है। उनका फरमान सुनते ही सभी अधिकारी और कर्मचारी कुछ ही क्षणों में बैठक हाल में एकत्रित हुए। बैठक की शुरुवात करते हुए माननीय उपपंजीकार, श्री आर.के. बाउल साहब को उस मिटिंग का अध्यक्ष चुनते हुए उन्हें अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया गया। उसके बाद मिटिंग की कार्यवाह शुरू हुई। सोसायटी एजेंडा के अनुसार मिटिंग में विभिन्न विषयों

पर चर्चा करते हुए मिटिंग संपन्न हुई। उसके बाद शुरू हुआ पिकनिक में आने का असली मकसद पूरा करने का काम। सभी सदस्य अपनी-अपनी इच्छा और रुचि के अनुसार पिकनिक का आनंद उठा रहे थे। कोई प्रवेश द्वारा के पास स्थित स्विमिंग पूल के संगीतमय वातावरण में डुबकियां लगा रहा था तो कोई रिमिक्स गानों पर मस्त होकर नाच रहा था। कुछ सदस्य जो स्विमिंग जानते थे अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे थे और अपने मित्रों को खीच-खीच कर पानी में धकेल रहे थे। साउंड डीजे होने से और जोशीले डांस गीत होने से हर कोई मचलकर आनंद सागर में डूबने को लालायित हो उठा। मैंने भी स्विमिंग पूल में डाइव मारी और सुख की अनुभूति लेने में हिचकोले खाने लगा। स्विमिंग पूल की गहराई केवल 4 से 5 फीट होने के कारण हर कोई निर्भय होकर स्विमिंग का मजा ले रहा था। वहां रिसार्ट की ओर से गार्ड भी तैनात थे। हमलोग उस पूल में करीब चार घंटों तक तैरते रहे। बाद में हमें सूचना मिली की खाना तैयार है और पहले खाना खा लिया जाए। लेकिन उससे पहले हमें रिसार्ट में आते ही भरपूर बढिया नाश्ता दिया गया था जिसमें ऊसल, पाव, पोहे, चाय-काफी आदि स्वादिष्ट व्यंजन थे। खाना खाने जब हम हॉल में पहुंचे तो व्यंजन देखकर दंग रह गए। वेज, नानवेज दोनों की व्यवस्था थी। पुलाव, पूरी, फुल्के, चपाती, मिक्स भाजी, दही, गुलाबजामुन और मटन जैसी लजीज पकवानों से टेबल सजा था। हम सबने बड़े मजे से आनंद उठाते हुए उन स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद चखा। भरपूर खाना खाने के बाद हम फिर अपने मिशन की ओर अग्रसर हुए। मिशन था पिकनिक का यथा संभव ज्यादा से ज्यादा आनंद उठाना। फिर मैं और मेरे जैसे कथित उत्साहित युवा सदस्य फिर से स्विमिंग पूल में डुबकियां लगाने, तैरने के लिए दौड़ पड़े और हम सब 4 बजे तक तैरने का आनंद लेते रहे।

क्रमशः



हिंदुस्तानी संगीत और हम

आर.आर. वानखेड़े
सहायक पंजीकार, नागपुर

“संगीत” एक साधना है, तपस्या है। इसका ध्यान (रियाज) करने से ईश्वर से सानिध्य प्राप्त होता है। आत्मा की, मन की सुधी होती है। इसकी साधना से छल, कपट, द्वेष आदि दुर्गुणों से हम बड़ी सहजता से छुटकारा पा सकते हैं, दूर रह सकते हैं। हमारा आचरण, व्यवहार निर्मल भाव से होता है अर्थात् हमारा जीवन सहज, सुंदर और सफल हो सकता है।

मैं तो दृढ़ता से सह सकता हूँ कि हमारे जीवन में यदि संगीत न हो तो बिना नमक के भोजन जैसा बेस्वाद हो जाएगा। जिस तरह दूध में शक्कर मिलाने से उसका स्वाद और मीठा हो जाता है उसी प्रकार हमारे जीवन में संगीत को अपनाते से तनाव मुक्त मीठास भरा आनंदित जीवन हमें मिलता है।

‘संगीत’ में नृत्य, गायन और वादन अंतर्भूत है। इन तीनों अंगों का अलग-अलग महत्व है। जैसे- नृत्य कला में अनेक प्रकार हैं, वैसे ही गायन और वादन में भी अनेक प्रकार समाविष्ट हैं। मैं यहां ‘गायन कला’ का महत्व और उनके प्रकारों की चर्चा करना चाहूंगा क्योंकि मुझे इसमें सबसे अधिक रुचि है।



गायन कला के अलग-अलग प्रकार शास्त्र में उद्धृत किए गए हैं। इसमें शास्त्रीय गायन एवं अशास्त्रीय गायन, ऐसे दो भाग हैं। शास्त्रीय गायन में ख्याल, धृपद-धमार, दादरा, तुमरी, चैती, कतरी आदि प्रकार होते हैं तो अशास्त्रीय संगीत में भावगीत, नाट्यगीत, चित्रपट संगीत, गझल, भजन आदि आते हैं। किंतु उत्कृष्ट गायन करने के लिए आपको संगीत-गायनशास्त्र का मूलभूत ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। शास्त्रीय गायन में गायकी की अलग-अलग शैलियां हैं जो भिन्न-भिन्न घरानों के नाम से जानी जाती हैं। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में पंजाब घराना, दिल्ली घराना, जयपुर घराना, ग्वालियर घराना, आगरा घराना आदि मशहूर हैं। जो गायक इन घरानों से तालिम पाकर उसकी गायनशैली को आत्मसात करता है और उसी प्रकार का गायन प्रस्तुत करता है उसे उस घराने से जोड़ दिया जाता है।

हम सब जानते हैं कि तुमरी-दादरा, कजरी आदि बहुत पुरानी गायन कला है जो आज भी अपनी अहमियत रखता है। मैं आपको इसके बारे में संक्षिप्त में अवश्य बताना चाहूंगा। आपने रेडियो पर इन गानों का जरूर सुना होगा- “याद पीया की आए”, “सैय्या बोल, नैना मोरे तरस गए”, “का करू सजनी, आए न बालम”। ये बहुत लोकप्रिय तुमरी के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह बोल किसकी आवाज में गाए गए हैं कि आज भी उतने ही कर्णप्रिय एवं सदाबहार हैं। वे हैं उस्ताद बड़े गुलाम अली खां साहब। आज लो इन गानों को तुमरी के नाम

से जानते हैं लेकिन यह सच नहीं है, यह सब दादरे हैं। “दादरा” भी एक ऐसा गीत प्रकार है जिसमें भावुकता, बेचैनी, रूठना आदि भावों का दिग्दर्शन होता है। अधिक रागों के मिश्रण से इसके सौंदर्य को बल मिलता है। इन तुमरी/दादरा आदि गायन शैली का प्रयोग हमारे हिंदी फिल्मों में बड़ी बखूबी से किया जाता है। फिल्मों के कथा और उसके फिल्मांकन के अनुसार ही तुमरी ढंग पर आधारित गाने हमें सुनने को मिलते हैं। जैसे फिल्म चाचा जिंदाबाद में राग ‘काकी’ पर आधारित तुमरी- मोहे बैरन निंद न आए, फिल्म गंगाजमुना में राग ‘मांजखमाज’ पर आधारित – तेरा मन बड़ा पापी सावरिया रे, मैं सुहागन हूँ फिल्म में राग देस पर आधारित गोरी तोरे नैन, नैनवा आदि। तुमरी में श्रृंगार- नजाकत होती है। वैसे तो आजकल के युवक युवतियों को इन गायन प्रकार में कोई दिलचस्पी नहीं है। उन्हें तो रिमिक्स गानों पर बहुत आनंद मिलता है। अब तो हिंदुस्तानी और वेस्टर्न म्यूजिक साथ में मिलाकर ‘फ्यूजन’ म्यूजिक साथ में बनाया जा रहा है जिसे युवा पीढ़ी द्वारा पसंद भी किया जा रहा है।

दोस्तों हमारा जीवन अनेक रंगों से होकर गुजरता है जिसमें कभी खुशी के रंग होते हैं तो कभी दुख भरे प्रसंगों से भी हमें रूबरू होना पड़ता है। मेरी सोच यह है कि यथासंभव हमें जिंदगी को खुशरंग बनाने का प्रयास करना चाहिए। हमें गमगीन बातों को भूलकर केवल और केवल जिंदगी के हर पल में खुशियों के पल को ढूँढना होगा और उसका ज्यादा से ज्यादा आनंद उठाना होगा। इसी मंत्र को ध्यान में रखकर मैं अपने जीवन में कई असहय दुखभरी घटनाओं के बावजूद खुशियों के रंग भरने का प्रयास करता आ रहा हूँ। इन्हीं प्रयासों से मुझे एक रंग ऐसा मिला जिसे अपनाकर मैं हर तकलीफ को बड़ी सहजता से दूर करता हूँ। वह अदभूत रंग है “संगीत”। अब इसका प्रयोग मेरे जीवन का अभिन्न अंग है जिसमें हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का अहम स्थान है। जीवन में खुशियों के रंग भरने के लिए मैंने “संगीत” विशेषतः हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को सबसे उचित माध्यम माना। हमारा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है। इसे सर्वोच्च स्थान देने का श्रेय अनेक महान दिग्गजों को जाता है। जिसमें मियां तानसेन, हरिदास स्वामी बैजूबाबरा, हीराबाई बड़ोदकर, पंडित बिष्णु दिगंबर पलूस्कर, पं. भीमसेन जोशी, पंडित जसराज, पंडित हरिप्रसाद चौरसिया(बांसुरी), पंडित शिवकुमार शर्मा(संतूर), पंडित अमजद अली खान(सरोद), पं. विश्वमोहन भट्ट(मोहन वीणा), राशिद खान(गायन), लताजी मंगेशकर, आशाजी भोसले, मोहम्मद रफी, मुकेश, किशोर कुमार आदि अनेक महान गायक हैं।

मैं जब भी कभी किसी बात पर उदास हो जाता हूँ तो मैं मेरी प्रिय हारमोनियम निकालकर भजन/गीत/गजल/तुमरी आदि गाकर उस उदासी को दूर भगा देता हूँ। हम सभी जानते हैं कि संगीत शास्त्र एक अदभूत

शास्त्र है। कहते हैं पुराने जमाने में दिल की गहराई से जब कोई गवैया राग “दीप” गाता था तो दिए जल उठते थे, राग “मेघ” गाने पर आसमान से काले बादल घुमड-घुमड कर बारिश करते। इतना ही नहीं, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में कुछ ऐसे राग हैं जिसे सुनकर बीमार व्यक्ति तंदुरुस्त हो सकता है। असाध्य रोगों का इलाज भी संगीत के माध्यम से साध्य हुआ, इसका प्रमाण हमें शास्त्रों में मिलता है।

हिंदुस्तानी संगीत हमारी धरोहर है जिसका जतन करना हमारा परम कर्तव्य है। सुसभ्य और सुसंस्कृत समाज निर्माण में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का असाधारण महत्व एवं योगदान है।



मेरा दृष्टिकोण हिंदी के पक्ष में

श्रीमती के. विजयलक्ष्मी,
मुख्य लिपिक, हैदराबाद

प्रत्येक राष्ट्र की हर क्षेत्र में अपनी एक पहचान होती है, समग्र राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने के लिए उसकी अपनी एक भाषा होती है। वह भाषा कोई भी हो सकती है, मेरे विचार से हर भाषा का एक विशेष प्रयोजन होता है, कोई भी भाषा निष्प्रयोजन नहीं होती है। चूंकि भाषा संपर्क का माध्यम होती है, यह संपर्क की प्रकार से होता है, यथा लेखन कार्य के द्वारा या स्वयं भाषा के द्वारा। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा भी है तथा उसके साथ-साथ संपर्क भाषा भी। संपर्क भाषा के रूप में उसे केवल हिंदी वालों की भाषा के साथ जोड़ना एक विशेष भाषा के साथ अन्याय करने के सिवाय कुछ भी नहीं है। चूंकि कोई भी भाषा विशेष किसी विशेष समुदाय की संपत्ति नहीं होती है। वह तो केवल एक संपर्क का ही कार्य करती है।

दक्षिण भारत में भी पहले हिंदी भाषा को केवल हिंदी वालों की भाषा के रूप में देखा जाता था लेकिन आज हिंदी भाषा का दृष्टिकोण दक्षिण भारत के लोगों में बहुत हद तक बदल गया है, इसमें अधिक श्रेय सिनेमा जगत एवं मीडिया का भी है जिसने “चेन्नै एक्सप्रेस” जैसी फिल्में बनाकर प्रेम के माध्यम से अहिंदी भाषियों में हिंदी सिखने की भावना को जागृत किया है। अब हम सब की यह जिम्मेदारी है कि हम हिंदी को हिंदी वालों की भाषा न समझकर उसे केवल संपर्क भाषा के रूप में देखकर अपनाएं एवं उसका खुलकर प्रयोग करें जिससे हमारे एकता के सेतु को बल मिल सके।

आयकर अपीलीय अधिकरण की सभी पीठों में वर्ष में एक बार हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है, कर्मचारी एवं अधिकारी हिंदी की प्रतियोगिताओं में प्रसन्न होकर हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं तथा विजेताओं को पुरस्कार भी मिलता है। यह अच्छी बात है लेकिन हमें हिंदी में काम केवल सितंबर के माह में करके दिखाना है, यह हमारे स्वार्थ को चरितार्थ करता है। ऐसी भावना न होकर हमें हिंदी के साथ आत्मसात होकर हर समय हिंदी में काम करते रहना चाहिए तभी हमारी सच्ची भावना हिंदी भाषा के साथ जुड़ेगी न कि हिंदी वालों के साथ।

अंत में मैं यह भी कहना चाहती हूँ कि कोई भी भाषा को पूर्ण रूप से सीखने, उसमें कार्य करने का एक अलग ही आनंद का एहसास होता है।



नारी का सम्मान

श्रीमती श्रीदेवी नायर,
प्रधान लिपिक, मुंबई

बधाई हो बधाई! संगीता जी, आपको अपने नए वेंचर की शुभकामनाएं। चारों ओर से वाह-वाही आ रही थी। दिल और दिमाग मानो ठप्प से हो गए थे। एक अजीब सी खुशी की लहर मन में दौड़ रही थी, मेरी नई बूटिक का उदघाटन समारोह था। थोड़ी देर में सारा मेहमान एक-एक करके चले गए। मैं और मेरी तन्हाई एक बार बातें करने लगे।

बालकनी में बैठकर चाय की चुस्की लेते हुए मैं और मेरी तन्हाई फिर एक बार बातें करने लगे। ठंडी हवा के झोके मेरे लाल साड़ी को हवा में झुला रही थी। उस लाल साड़ी को देखकर मेरा मन फिर से अपने अतीत की ओर खींचकर मुझे ले गया। दस साल पहले की बात है। मैं बहू बनकर उस घर में आई थी। लक्ष्मी आयी है, यह कहकर मेरा स्वागत हुआ। मैं भी फूली नहीं समाई। ऐसा लगा कि शायद मेरा अधूरा सपना यहां पूरा हुआ है।

मेरे ससुराल में औरतों की बड़ी इज्जत होती है। लेकिन उन्हें बोलने या सोचने की अनुमति नहीं थी। सभी चाहते हैं कि उनकी बहू-बेटियां पढ़ी लिखी हों। कढ़ाई-बुनाई और रसोई घर के कामों में निपुण होना चाहिए लेकिन यह सभी गुण अपने परिवार तक ही सीमित होने चाहिए। मुझे फैशन डिजाइनिंग का कोर्स करना था। बड़ी हिम्मत जुटाकर

मां से इस सिलसिले में चर्चा की तो उन्होंने फॉर्म भरने के बजाय मेरे हाथ में शादी का प्रस्ताव थमा दिया। मां के आंसू और उसूलों ने मुझे विवश कर दिया। दिल और दिमाग की कशमकश में आखिर दिमाग की बात को तवज्जो दी गई। इस तरह मैं ससुराल पहुंच गई। अब तो मुझे अपने पति का ही सहारा था।

मेरे पति श्रीमान बड़े ही संवेदनशील और सुलझे हुए व्यक्ति हैं। वह तो एक सरकारी मुलाजिम ठहरे। फिर एक बार दिल और दिमाग के बीच द्वंद युद्ध चल रहा था। पर इस बार मैंने अपने दिमाग की सुनी और श्रेयस को बता ही दिया कि मुझे फैशन डिजाइनिंग का कोर्स करना है। नकारात्मक उत्तर की प्रतीक्षा में मैं अपने आपको दिलासा भी देने लगी थी। पर श्रेयस तो नए युग के पुरुष निकले। मेरी बात मान गए और कहा कि मैं पिताजी से बात करता हूँ। फिर एक बार दिल धसने लगा और ठंडी आस से सुबह का इंतजार करने लगी।

शायद इस सुबह का मुझे बेसब्री से इंतजार था। ऐसा लग रहा था कि मानो सूरज कब अपनी किरणों से मेरे जीवन में रोशनी भरेगा। मैं बड़ी प्रतीक्षा से सबके पसंद का नाश्ता तैयार कर इंतजार कर रही थी। खास करके अपने ससुर जी का। पर मुझे क्या पता था कि पुरानी रूढ़ि विचार मेरे पराठे के मक्खन से थोड़ी पिघलने वाले थे। श्रेयस ने मुझे आश्वासन दिया कि वह मेरे सपनों को इस तरह से टूटने नहीं देंगे। मैंने अपने मन को दिलासा दिया कि चलो कुछ दिन और सही।

श्रेयस का तबादला मुंबई में हो गया। मुझे ऐसा लगा कि मानो मेरे सपनों को पंख लग गए। हम मुंबई आ पहुंचे और श्रेयस ने सचमुच मेरे सपनों को साकार कर दिया। मेरा कोर्स पूरा होने पर मुझे छोटे-छोटे काम देकर मुझे प्रोत्साहित किया और मुझे आगे बढ़ने की हिम्मत दी। मेरी मेहनत और लगन देखकर श्रेयस ने अपनी एक बूटिक खोलने का सुझाव दिया। मैं तो हक्का-बक्का रही गई। पर मैंने भी उन्हें निराश नहीं होने दिया और परीक्षा में खरी उतरी। इस तरह से एक, फिर दो और आज तीसरे बूटिक की शुरुवात हुई।

इन सभी सफलता की नींव श्रेयस के विचार और मेरे उपर उनका विश्वास है। मुझे लगता है कि नारी का सम्मान और उसके सपनों को साकार करने की जिम्मेदारी परिवार के हर सदस्य का है। घर से परिवार, परिवार से समाज और समाज से ही देश बनता है। हम हमारे घर में देवी की पूजा करते हैं पर घर की लक्ष्मी को सिर्फ कामकाजी औरत और बच्चों को संभालने वाली आया मानते हैं। आजकल के जमाने में औरत घर के काम-काज के साथ-साथ घर की आमदनी बढ़ाने में भी हाथ बटाते हैं। वह तो घर का स्तंभ है। घर का सारा माहौल उसके आसपास ही घूमता है। वह हमेशा अपने

परिवार के हित और खुशी के लिए तत्पर रहती है। क्या ऐसी नारी के लिए यह समाज थोड़ी इज्जत, थोड़ी प्रशंसा या थोड़ी मान्यता नहीं दे सकता? क्या उन्हें सपने देखने का कोई अधिकार नहीं है?

इसलिए हमें यह प्रण करना चाहिए कि हर घर में नारी की इज्जत हो और सम्मान हो न कि शोषण और अत्याचार हो। अपने ही घर में हम नारी को लक्ष्मी माने तो ही समाज में नारी के प्रति सम्मान की भावना जाग उठेगी।



हो गई मैं परेशान, पर खुश हूँ

श्रीमती राजेश्वरी ए,
उच्च श्रेणी लिपिक, दिल्ली

मैं हो गई परेशान आजकल,
दफ्तर आना पड़ रहा है जल्दी
और घर पहुंचती हूँ देर से, क्योंकि
शुरू हो गया है बायोमेट्रिक हाजिरी।

कितने अच्छे थे पहले, जब आते थे
मर्जी से और जाते थे मर्जी से।



सोती थी आराम से, उठती थी आराम से,
दफ्तर आती थी आराम से।
कोई झंझट नहीं था ट्रैफिक जाम में फंसने का,
न मेट्रो रेल गाड़ी की भीड़ को झेलने का।

अब हुई मेरी हालत खराब,
सुबह उठती हूँ जल्दी,
दफ्तरी भागती हूँ जल्दी,
झेलती हूँ ट्रैफिक जाम को,
फिर भी पहुंच नहीं पाती दफ्तर समय पर,

परेशान होती हूँ मैं, क्योंकि
लग जाते हैं लाल निशान हाजिरी पर।

धोखा देती है मेट्रो भी कभी-कभी,
रुक जाती है उसकी सेवा
तकनीकी कारण बताकर,
और भी लेट हो जाती हूँ मैं उस दिन,
परेशान होती हूँ मैं, और भी,
क्या पता तनख्वाह मिलेगी पूरी या नहीं।
पर खुश हूँ मैं यह सोच कर,
अकेले मैं नहीं सब हैं परेशान।
पर खुश हूँ मैं, यह देख कर,
अकेले मैं नहीं, दौड़ते हैं सब दफ्तर को।

मेट्रो रुकते ही भागते हैं लोग दफ्तर को,
गाड़ी रुकने से पहले ही, गाड़ी से कूद कर,
दौड़ते हैं लोग दफ्तर को।

खुश हूँ मैं यह सोचकर,
अच्छा है भागना-दौड़ना,
कसरत हो जाएगी ऐसे,
बन जाएगी सेहत सबकी अच्छी।

भाग जाएगी सरकारी नौकरों की सुस्ती,
हो जाएंगे सब चुस्त और तंदुरुस्त,
हो जाएगी दूर इससे कई बीमारियां।

जो भी होता है, होता है अच्छे के लिए,
इससे सरकारी काम भी हो जाएगा समय पर,
और भला हो जाएगा जनता का, देश का।

शत-शत प्रणाम बायोमेट्रिक मशीन को,
बना दिया तुमने सरकारी नौकरों को,
चुस्त और तंदुरुस्त।
सीखा दिया तुमने सरकारी नौकरों को,
अनुशासन का पाठ।



निराशावादी हर अवसर में कठिनाई देखता हैं, जबकि
आशावादी हर कठिनाई में अवसर देखता हैं

- विन्स्टन चर्चिल



मेरे सपनों का शहर

श्री जयशंकर कुमार सिंह,
अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई

शाम ढलने को है, सूरज भी अपने मुस्कान को मंद करने की ओर अग्रसर है। हवाओं में धूल का उड़ना भी शांत हो चुका है और इस ढलती हुई शाम में आज गांव में मैं बड़ी ही जल्दी-जल्दी अपनी साईकिल को कच्ची सड़क के उपर भगाता जा रहा हूँ। आज मुझे ना तो रास्तों के किनारे के खेतों में लगे फसलों की हरियाली सूझ रही है और ना ही रास्तों के किनारे से गुजरने वाले लोग। बस अभी तो मैं सिर्फ अपने घर पहुंचने की सोच रहा हूँ क्योंकि आज पूरे छः महीनों के बाद 'मुंबई' शहर से मेरा जिगरी दोस्त सूरज अपने घर आ रहा है। शाम को छः बजे ही उसकी ट्रेन गांव के ही पास के स्टेशन पर आ रही है। घर पहुंचते ही मैंने अपने किताबों के झोले को रखा और अपनी मां से पूछा- "मां, कोई मिलने आया था क्या?" आज मां को भी पता था कि सूरज गांव आ रहा है और मैं बेसब्री से उसका इंतजार कर रहा हूँ। अतः मां भी आज मेरे साथ मसखरी करती है "हां बेटा, सूरज आया था तुमसे मिलने पर तुम नहीं थे तो वह चला गया और कह गया कि कल आउंगा।" परंतु मां के चेहरे के मुस्कान से मैं सब समझ गया।

एक-एक मिनट बड़ी बेचैनी से कट रहे थे। मेरी नजरे बार-बार मेरी घड़ी पर जा रही थी और यह बेसब्री भी क्यों न हो, पूरे गांव भर में मेरे हम उम्र लड़के मेरे और सूरज की दोस्ती की मिसाल देते थे। हम दोनों बचपन से ही साथ-साथ खेले कूदे, पढ़े-लिखे और शरारत करते हुए बड़े हुए। गांव के ही हाई-स्कूल से बारहवीं करने के बाद हम दोनों सरकारी सेवा में भर्ती होने के लिए परीक्षा की तैयारी करने लगे। फिर सूरज की मेहनत रंग लाई और सूरज की नौकरी मुंबई शहर के एक सरकारी संस्थान में हो गई। सूरज के शहर जाते समय मैं बड़ा उदास था पर मुझे खुशी इस बात की थी कि मेरा दोस्त अब शहर जा रहा है। फिर सूरज के शहर जाने के बाद मैं और भी लगन के साथ पढ़ाई करने लगा था। आज पूरे छः माह बाद सूरज मुंबई शहर से पहली बार गांव आ रहा था और मैं आंखे बंद कर अपने दोस्त से साथ बिताए लम्हों को याद कर रहा था।

तभी घर के बाहर से किसी के तेज कदमों की आहट सुनाई दी। मैं तुरंत उठ कर बैठ गया। सामने देखा तो शाम के धुमिल रौशनी में सूरज सामने खड़ा हो मुझे देखकर मुस्करा रहा है। मैं फौरन ही उठा और सूरज के गले लग गया। फिर हम दोनों में बातों का सिलसिला शुरू हुआ। सूरज ने आते ही

बताया कि वो सिर्फ दस दिनों के लिए आया हुआ है। सुनकर मैं थोड़ा उदास तो हुआ परंतु फिर यह सोचकर खुश हो गया कि चलो अभी तो दस दिन बाकी है।

दस दिनों तक मैं जब भी सूरज से मिलता तो हमेशा मुझे मुंबई शहर के बारे में बताता कि शहर कितना बड़ा है, वहां कि इमारते कितनी ऊंची-ऊंची है। सूरज बताता कि वहां कि इमारतें इतनी बड़ी-बड़ी होती हैं कि हमारे गांव के सारे लोग उसमें समा जाएं। वहां रात और दिन का पता ही नहीं चलता, वहां रात को भी शहर अंधेरे में नहीं डूबता। इतनी गाड़ियां सड़कों पर दौड़ती हैं कि सड़क पार करने की हिम्मत न पड़े। हर मिनट बसों की तरह ट्रेन चलती है। लड़कियां तथा औरतें भी गाड़ियां तथा स्कूटर चलाती हैं। और तो और, शहर में लड़कियां तथा औरतें भी हमारी तरह जींस तथा कोट-पैट पहनते हैं। यह सब सुनकर मैं कभी हंसता, को कभी मेरी आंखे आश्चर्य से फैल जाती। सूरज ने शहर के बारे में और भी अनोखी-अनोखी बातें बताई कि वहां के लोग सीढीयां नहीं चढ़ते बल्कि सीढीयां ही अपने-आप चलती हैं। एक मंजिल से दूसरी मंजिल तक जाने के लिए इमारतों में लिफ्ट होती है, बस बटन दबाओ और बीसों मंजिल तक खड़े-खड़े पहुंच जाओ। सूरज ने और भी बताया कि वह किन-किन फिल्मों के हीरो-हीरोइन को मुंबई में देख चुका है। यह सब देखकर बस मेरा मन शहर की कल्पनाओं में खो जाता।

दस दिन कैसे बीत गए, पता ही नहीं चला और आज सूरज वापस मुंबई शहर जा रहा है। सूरज के जाने के बाद मैं और भी लगन और कड़ी मेहनत से सरकारी सेवा की परीक्षा की तैयारी करने में लग गया। इस तरह एक वर्ष और बीत गए। हालांकि बीच में मेरा दोस्त सूरज भी दो बार गांव आया और मुझे और भी बहुत सारी शहर की अनोखी-अनोखी बातें बताई।



Mumbai skyline

अंततः मेरी भी मेहनत रंग लाई और मैं भी कर्मचारी चयन आयोग की परीक्षा में सफल हो गया और भाग्यवश मेरी भी नौकरी मुंबई शहर में ही हो गई। मेरा तो मानो सपना ही

सच हो गया, मेरे तो सपनों के पंख निकल आए और आज मैं अपने सपनों के शहर की कल्पनाओं को मन में लिए हुए मुंबई शहर जाने के लिए अपने गांव के रेलवे स्टेशन पर गाड़ी का इंतजार कर रहा था। मेरी मां अपनी आंखों में आंसू लिए मुझे कई तरह की हिदायतें दे रही थी। मेरे वृद्ध पिता अपने आंखों में एक नई आशा कि किरण की चमक लिए मुझे निहार रहे थे। मैं मां की बातों को सुनकर जबाब देता- “मां, तुम चिंता मत करो, मैं वहां अकेला नहीं हूँ, सूरज भी है और वो मुझे लेने रेलवे स्टेशन भी आएगा। ”

अपने आंखों की आश्रुधारा की बाढ़ को रोककर मैंने उनके चरण स्पर्श कर विदा लिया और ट्रेन मेरे सपनों के शहर की ओर चल पड़ी। पूरे रास्ते मैं रेलगाड़ी की खिड़की से बाहर झाकता और अपने सपनों के शहर को रास्ते में दूढ़ने की कोशिश करता और अपने शहरी कल्पनाओं को याद करता और बार-बार उस कागज के टुकड़े को देखता जिस पर सूरज के मुंबई शहर का पता लिखा था।

मुंबई पहुंचने पर सूरज मुझे लेने स्टेशन पर नहीं आ सका। अतः मैं टैक्सी से उसके रूम तक पहुंच गया। हालांकि इस बात का मुझे बुरा लगा पर फिर मैंने अपने मन को समझा लिया। मुंबई आने पर मुझे अपने मित्र सूरज में कुछ बदलाव नजर आया। जैसे वो पहले की तरह हंसमुख नहीं था, पहले जैसा वह घुलमिल कर बातें नहीं कर रहा था। खैर आज तीन दिन हो गए मुझे मुंबई आए। आज मैंने अपना ऑफिस भी ज्वाइन कर लिया जो सूरज के रूम से 25 किलोमीटर की दूरी पर था और ऑफिस आने-जाने के लिए लोकल ट्रेन से सफर करना पड़ता था। मैं आज जैसे ही अपना पहला दिन ऑफिस में समाप्त कर रूम पहुंचा तो सोचा चलो आज सूरज को अपने पहले दिन के ऑफिस के बारे में बताऊंगा परंतु रूम पहुंचने के साथ ही सूरज ने मुझसे कहा कि मैं ज्यादा से ज्यादा 2 दिन और उसके पास रुक सकता हूँ तथा इन दो दिनों के अंदर मैं अपने रहने के लिए नया बंदोबस्त कर लूँ। मेरे तो जैसे पांव तले जमीन ही खिसक गई, परंतु मैं कुछ ना कह सका। अपने प्रिय मित्र के इस बदले हुए तेवर को मैंने समझने की बहुत कोशिश की परंतु ना समझ सका।

नए जगह पर शिफ्ट होने के बाद मैं रोज मुंबई के लोकल ट्रेन से ऑफिस आता-जाता। मैंने यहां आने के बाद महसूस किया कि यहां तो लोग चिटियों की तरह भरे हुए हैं। हर समय तथा हर जगह यहां इतनी भीड़ होती है जैसे हर रोज यहां गांव वाला मेला लगा हो। लोग ट्रेनों में जानवरों की तरह ठूसकर दफतर जाते हैं। यहां किसी के लिए अपनों के लिए फुर्सत नहीं। बस लोग समय और काम की रेस में दौड़ रहे हैं। लोग ट्रेनों में सफर भी करते हैं और डरे भी रहते हैं जैसे आज उनकी जिंदगी का आखिरी दिन हो। बातों-बातों में पता चला कि यहां आतंकवाद नाम की भी कोई चीज होती है जो बेगुनाह

लोगों की जान लेने की फिराक में हमेशा तत्पर रहते हैं। मैंने सोचा गांव में तो लोग सिर्फ भूतों से ही डरते हैं, वहां तो आतंकवाद नाम का कोई भूत नहीं होता है।

कुछ महीनों के भीतर ही मुझे यहां अपने-आप में परिवर्तन महसूस होने लगा। इतनी ज्यादा ध्वनि प्रदूषण तथा वायु प्रदूषण यहां थी कि उससे मैं हर सयम चिड़चिड़ा महसूस करने लगा। मैं अपने गांव को याद करता कि कितनी शांति थी वहां। कितनी ताजी हवा थी गांव की। यहां मुंबई में लोग सुबह-सुबह छोटे-छोटे पार्क में टहलते हैं तथा बनावटी हंसी की प्रक्टिस करते हैं ताकि स्वस्थ रह सके, जैसे सारा दिन इन्हें फिर ऐसी हंसी नसीब न हो। जबकि गांव में तो दूर-दूर तक खेतों में प्राकृतिक हरियाली थी तथा सब एक-दूसरे का हालचाल पूछकर ही हंस लिया करते थे।

स्वाइन फ्लू, हार्ट अटैक, डिप्रेशन और फोबिया जैसी बीमारियों के नाम भी मैंने यहीं आकर जाना कि ऐसी भी कोई बीमारी होती है, नहीं तो गांव में तो मलेरिया ही बहुत बड़ी बीमारी होती है। यहां लोग 40 मंजिल मकान में रहते हैं परंतु कोई एक-दूसरे को पहचानता नहीं था और मैं तो अपने गांव के सभी 400 घरों में सबको जानता था।

आज मुझे मुंबई में आए छः महीने हो चुके थे। रविवार के दिन मैं सुबह-सुबह अपने कमरे में बैठा अखबार पढ़ रहा था। तभी किसी के दर्द से कराहने की आवाज मेरे कानों में सुनाई पड़ी। खिड़की से देखा तो सामने वाले शर्माजी के पिताजी थे जो अपने बुढ़ापे की कमजोरी के कारण बिछावन से उठने का प्रयास कर रहे थे। मैंने कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि कई दिनों से वो रूम में ही पड़े हैं, अतः उन्हें बाहर निकलकर सुबह की थोड़ी ताजी हवा खानी है। मैंने पूछा कि शर्मा जी कहां गए हैं, उन्हें आपकी देखभाल करनी चाहिए तथा सुबह-सुबह आपको खुली हवा में टहलाना चाहिए तो उस बूढ़े असहाय व्यक्ति का उत्तर सुनकर मेरा दिल बैठ सा गया। उन्होंने कहा “वो तो सुबह-सुबह अपने प्यारे कुत्ते टॉमी को जागिंग के लिए ले गए हैं। आज पता चला कि यहां रिश्ते भी कितने मजबूत होते हैं। लोग जानवरों को अपने माता पिता से ज्यादा प्यार करते हैं। ”

हालांकि ऐसा कहा जाता है कि दूढ़ने से भगवान भी मिल जाता है। मैं भी इस नए अजनबी दुनिया में अपनों को दूढ़ रहा हूँ। फिर जहां बुराई होती है, वहां अच्छाई भी जरूर होती है। मुझे भी यहां कुछ लोग ऐसे मिले जिनके विचार बहुत ही अच्छे थे। छः महीनों के अथक प्रयास के बाद मुझे दो बहनें मिली जिनके प्रति मेरे मन में आदर और श्रद्धा बहुत अधिक है तथा जिन्हें मैं अपनी सगी बहन मानता हूँ। एक बड़े भाई समान व्यक्ति मिले जो हमेशा दूसरों की मदद किया

करतो। एक अच्छा मित्र भी मिला। इस तरह मुझे मेरे सपनों के शहर में जीने में थोड़ी राहत महसूस हुई।

धीरे-धीरे मुझे और भी बातें मेरे सपनों के शहर के बारे में पता चली कि ज्यादातर लोग यहां सिर्फ पैसों के पीछे भागते हैं। यहां मदद करने के नाम पर अगर आप किसी के लिए लिफ्ट का बटन दबाकर किसी के लिए दो सेकण्ड के लिए लिफ्ट रोक दें तो आपको इसी कार्य के लिए दिल से एक थैंक्यू मिल जाएगा और आपका सीना गर्व से फूल जाएगा मानों आपने किसी अंधे को सड़क पार करवाकर उसे गंतव्य स्थान तक पहुंचा दिया हो। गांव में कोई भूखा नंगा नहीं सोता परंतु यहां तो एक बड़ी आबादी ही प्लेटफार्म पर जिंदगी गुजारती है।

पूरे आठ महीनों के बाद आज पहली बार मैं छुट्टी पर अपने गांव जा रहा हूँ और ऐसा लग रहा है जैसे सच में आज मैं अपने सच्चे सपनों का शहर जा रहा हूँ जहां लोगों के चेहरों पर हमेशा एक सच्ची मुस्कान टिकी रहती है। गांव पहुंचने के बाद मैं एक ही दिन में सबसे मिलना चाहता था जैसे सबसे मिले सदियों बीत गए हो। रात को मां के हाथ का खाना खाकर लगा कि आठ महीनों से मैं भूखा ही था। रात को मां ने पूछा “बेटा, तेरे सपनों का शहर कैसा है?” मैंने अपने मां को देखा और आंखें बंद कर कहा “मां, वो तो सचमुच सपना ही था पर वहां तेरे जैसा कुछ ना था, मां वो तो सपनों का शहर था, पर धरती का स्वर्ग तो यहां है, तेरी गोद में, अपने गांव में” और आंखें बंद कर कहते-कहते कब उस स्वर्ग की गोद में सो गया पता ही न चला। शायद आज बहुत दिनों बाद मैं सचमुच सो रहा था ‘मां’।



भारत का किसान

श्री जयशंकर कुमार सिंह,
अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई

‘भारतीय किसान’ एक ऐसा शब्द जिसके मन में आते ही आंखों में एक ऐसे व्यक्ति की छवि उभरती है जो अर्धनग्न अवस्था में अपने सर पर एक कपड़ा लपेटे हुए कंधे पर हल उठाए बादल की ओर निहार रहा है। भारतीय किसान हमारे देश के एक अरब पच्चीस करोड़ लोगों को अन्न प्रदान करते हैं, इसलिए इन्हें भारत का आधार स्तंभ कहते हैं।

आजादी के 65 वर्षों के बाद भी हमारे देश की कुल जनसंख्या की 52% श्रम शक्ति कृषि पर निर्भर है। राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान आज 17.8% है। भारत का कुल क्षेत्रफल विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.42% है तथा भारत की कुल भूमि का केवल 51% ही कृषि योग्य है। अर्थात् विश्व की कुल भूमि के हम सिर्फ 1.2% पर ही खेती करते हैं। इसके बाबजूद आज हमारा देश गेहूँ और चावल के उत्पादन में विश्व में दूसरे स्थान पर है और इसका श्रेय सिर्फ और सिर्फ हमारे किसानों को जाता है। भारतीय किसानों के कठोर परिश्रम और अथक प्रयास का ही ये नतीजा है कि आज हमारा देश आम, केला, चीकू, खट्टे नींबू, काजू, हल्दी, नारियल और अदरक के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर है।

हमारे देश को आजाद हुए आज लगभग 65 वर्ष बीत चुके हैं। हालांकि इन 65 वर्षों में भारतीय किसान की स्थिति में सुधार हुआ है किंतु आज भी उनकी स्थिति को पूरी तरह संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। हर वर्ष प्राकृतिक घटना तथा किसानों का दिन-ब-दिन माली हालत खराब होने के कारण वो आत्महत्या जैसे कठोर कदम उठा रहे हैं। सिर्फ वर्ष 2012 में महाराष्ट्र में 3786, आंध्र प्रदेश में 2572, कर्नाटक में 1875, मध्य प्रदेश में 1175 तथा केरल में 1081 के अलावे अन्य राज्यों में भी किसानों ने आत्महत्या ही है। इससे उनकी वर्तमान स्थिति का पता चलता है। मुंशी प्रेमचंद ने भी अपने उपन्यास ‘गोदान’ में भारतीय किसानों की दुर्दशा का चित्रण किया है।

भारतीय किसानों की दशा, उनकी परिस्थिति तथा उनकी भावनाओं को समझने के लिए हमें निम्नलिखित बिंदुओं को विस्तारपूर्वक जानना या अध्ययन करना होगा:-

1) भारत सरकार के द्वारा भारतीय किसानों की स्थिति को सुधारने हेतु उठाए गए अब तक के कदम:-

क) पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि का महत्व:- भारत सरकार ने कृषि तथा किसानों को बढ़ावा देने के लिए अपने प्रथम पंचवर्षीय योजना(1951-52) में ही सर्वाधिक महत्व कृषि को दिया। इसके बाद भी अन्य पंचवर्षीय योजनाओं में किसानों के हित के लिए कार्य किए जैसे आठवीं पंचवर्षीय योजना में

ख) हरित क्रांति:- भारत में हरित क्रांति की शुरुआत 1967-68 में एम.एस. स्वामीनाथन के द्वारा किया गया तथा किसानों को उन्नत तरीके से खेती करने तथा उन्नत बीजों का प्रयोग करने के बारे में बताया गया। जिससे भारतीय किसानों ने खासकर गेहूँ तथा चावल की पैदावार को कई गुणा बढ़ाया।

ग) कृषि सहकारी ग्रामीण बैंक की स्थापना:- भारतीय किसान की गरीबी को देखते हुए कृषि को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने कई शहरों में किसान बैंक खोले जिनसे उन्हें सस्ते ब्याज पर खेती करने के लिए कर्ज मिल सके।

घ) उन्नत बीज एवं खाद की उपलब्धता:- किसानों की पैदावार बढ़ाने तथा उनकी दशा में सुधार हेतु सरकार ने गांव-गांव में सरकारी खाद-बीज भंडार खुलवाए, जिससे उन्हें सस्ते दर पर खाद तथा बीज उपलब्ध हो सके।

2) भारतीय किसानों की बदहाली के कारण:-

क) प्राकृतिक घटनाएँ: भारत के ज्यादातर किसान अपने अच्छी खेती के लिए मानसून पर निर्भर हैं परंतु कुछ वर्षों से मानसून की अनियमितता ने भारतीय किसान की कमर तोड़ दी है। कभी भारी वारिश के चलते बाढ़ से फसल का तबाह होना तो कभी मौसम के सुखे से फसलों का जल जाना। इन प्राकृतिक घटनाओं का असर सबसे ज्यादा हमारे किसानों पर पड़ता है।

ख) साहुकार, जमींदार, सूदखोर से ऋणी होना:- पैसों के अभाव के चलते उंचे ब्याज पर धन लेकर किसान खेती करते हैं परंतु पैदावार अच्छी ना होने पर तथा सेठ साहुकार की नीतियों के चलते ये और भी कर्ज में डूबते जाते हैं और अंततः इन्हें अपनी जमीन से हाथ धोना पड़ता है।

ग) जोतों का आकार छोटा होना:- किसानों के खेतों का एक पुरखों से दूसरे पुरखों तक हस्तांतरित होते-होते जोतों का आकार छोटा होता चला जाता है तथा छोटे जोत होने के कारण किसान उसमें अनाज का उत्पादन छोड़ देते हैं तथा वो अन्य विकल्पों की तलाश करते हैं।

घ) आधुनिक व उन्नत मशीनों का अभाव:- खेती करने के औजार तथा मशीनों के अत्यंत मंहगा होने के कारण आज भी हमारे देश के किसान उन्नत ढंग को छोड़ पारंपरिक खेती करते हैं जिनसे उनकी उपज साधारण औसत दर्जे की होती है।

ङ) गोदाम तथा बाजार की कमी:- किसानों का आज अच्छे पैदावार होने के बावजूद वो उनका भंडारण सही तरीके से नहीं कर पाते तथा जिसके कारण उनके उपज का एक बड़ा हिस्सा या तो बारिश में सड़ जाता है या चूहे के द्वारा नष्ट कर दिया जाता है।

3) भविष्य में किसानों की स्थिति सुधारने योग्य उठाए जाने वाले कदम:-

क) चतुर्भुज स्वर्णिम योजना को बढ़ावा:- भारत सरकार द्वारा इस योजना के तहत लाखों गांवों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए सड़क बनाने की योजना है। भारत सरकार को चाहिए कि वो इस योजना को अधिकाधिक बढ़ाए जिससे किसानों के बीच संपर्क स्थापित हो।

ख) रोजगार के अवसर प्रदान करना:- किसान फसल अच्छी ना होने के कारण अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए दूसरे शहर रोजगार की तलाश में चले जाते हैं जिससे उसकी खेती छूट जाती है। सरकार को चाहिए कि वो किसानों को रोजगार के अवसर उनके गांव में ही प्रदान करे।

ग) शिक्षा का प्रसार:- आज भी देश के एक बड़े हिस्से में खेती पारंपरिक ढंग से की जाती है। किसानों को उन्नत बीज तथा कीटनाशी का प्रयोग करना चाहिए। गांव-गांव में अच्छे विद्यालयों के खुलने से उनमें शिक्षा का प्रसार होगा तथा वो उन्नत तरीके से खेती के बारे में जान सकेंगे और वो सूदखोरों और साहुकारों के चुंगल में भी नहीं फंसेंगे।

निष्कर्ष:-

“मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे-मोती” यह गीत हमारे किसानों के कठोर परिश्रम से ही सही रूप में अवगत कराता है। किसान एक दैवीय रूप है क्योंकि वो परिश्रम, सादगी, दया के प्रतिमूर्ति होते हैं। अगर भारत का किसान सुखी रहेगा तभी हम सुखी रह सकते हैं। आज हमारे देश के प्रत्येक परिवार को भोजन इन्हीं के कारण प्राप्त होता है। जब हमारे देश के किसान सुखी, समृद्ध व आनंदमय होंगे तभी हमारा देश भी सुखी-समृद्ध रहेगा। जिस प्रकार भारत के सैनिक हमें दूसरे देशों से रक्षा प्रदान करते हैं, ठीक उसी प्रकार हमारे देश के किसान हमें जीवन (भोजन) प्रदान करते हैं। हमें हमारे देश के किसानों पर गर्व है और सच में हमारे देश का गौरव है। इसलिए भारत में दिया गया लाल बहादुर शास्त्री का नारा “जय जवान जय किसान” सच्चाई पर खरा उतरता है। अतः हम अपने देश के किसानों को सच्चे मन से नमन करते हैं।

(मुंबई पीठ में हिंदी पखवाड़ा, 2014 के निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध)



हिंदी से राष्ट्र की अखंडता है

श्री अमित कुमार
अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई

हमारे देश को आजादी मिले छः दशक से भी अधिक समय गुजर चुका है परंतु आज तक हम मन और आत्मा से परतंत्र बने हुए हैं। हमारी वाणी के पांव में बेड़ियां तथा हाथों में हथकड़ियां पड़ी है। अंग्रेजों ने देश को को आजाद करने से पहले गुलामों की एक ऐसी बिरादरी खड़ी कर दी थी जो उनके जाने के बाद उनका स्थान ले सके और इस देश को आजादी के स्थान पर गुलामी के चक्रव्यूह में फसा लो इन गुलामों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है और देश की अखंडता पर प्रश्न चिन्ह लग चुका है।

आज हमारे देश में जो कुछ भी हो रहा है, चाहे उसे आतंकवाद कहिए या जातिवाद अथवा संप्रदायवाद। इसके लिए हम बाहरी ताकतों को जिम्मेदार ठहराकर चाहे जितना खुश हो ले परंतु वास्तव में यह सब हमारे विनाश की साजिश है जिसे हमने ही रचा है।

भाषा का झगड़ा:

भाषा कोई भी हो, वह समाज और देश के प्राणों को स्पंदन है। हमारे देश में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं, अतः हमें एक ऐसी भाषा की आवश्यकता है जो पूरे देश को एक सूत्र में बांध सके और वह सिर्फ हिंदी ही है जो हमें एक सूत्र में बांध सके। हिंदी तो प्रेम की भाषा है, संपर्क सूत्र है तथा एकता की कड़ी है। गांधी जी ने हिंदी के बारे में कहा है कि राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है। जब इस देश पर अंग्रेजों की हुकूमत थी और अंग्रेजी से पहचान एवं प्रतिष्ठा थी, तब हिंदी ने अंग्रेजी को ललकारा था। सारे देश ने एक स्वर में इस भाषा को अपनाया था। क्या बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, तेलगु और कन्नड़ आदि सभी ने हिंदी के स्वर और देश की आजादी का संघर्ष किया था। तब कोई झगड़ा नहीं था। तब अहिंदी भाषी (गांधी, दयानंद सरस्वती, सुभाषचंद्र बोस, चक्रवर्ती राजागोपालाचारी) हिंदी के हिमायती थे। यही कारण था कि भारतीय संविधान में हिंदी को राष्ट्रीय राजभाषा का दर्जा दिया गया है तथा सभी ने इसका स्वागत किया।

परंतु धीरे-धीरे सियासी ताकतों ने अपने प्रभाव को कायम रखने के लिए लोगों को तोड़ना शुरू किया और सबसे पहले इसका शिकार बनी हमारी राजभाषा हिंदी और यह कहकर झगड़ा करा दिया कि हिंदी के राष्ट्रभाषा होने से अहिंदी भाषी उत्तर भारत में रहने वालों के गुलाम बन जाएंगे।

तब उनसे यह पूछने वाला कोई नहीं था कि क्या वे अंग्रेजी भाषा बरकरार रखकर वे अंग्रेजों के गुलाम नहीं बने रहेंगे? उनको अंग्रेजी से यह खतरा क्यों नहीं महसूस हुई जो हिंदी से हुई। ये सभी सियासी चालें जो कुछ भी हुआ उसके परिणाम आज मूर्त रूप ले चुके हैं। जैसे- उग्रवाद, संप्रदायवाद, क्षेत्रवाद, असमानता, आर्थिक विषमता, गरीबी आदि स्वतंत्रता आंदोलनों में से कोई भी आंदोलन ऐसा नहीं होगा चाहे वह उत्तर के हो या दक्षिण के। भारत के आजादी के लिए सभी ने लड़ाई लड़ी थी, इसलिए नहीं कि बिहारी, गुजराती, मराठी, तेलगु अथवा तमिल लोगों के लिए। इन सभी आंदोलनों में हिंदी का प्रमुख योगदान था।

जिस भाषा को अपने देश में दो प्रतिशत समझने वाले हो और उससे किसी भाषा को कोई खतरा नहीं है, तब हिंदी से खतरा कैसे हो सकता है? यह मानसिक भ्रम लोगों को मिटाना होगा तथा देश की एकता एवं अखंडता के लिए इसे अपनाकर विभाजनकारी मंसूबों को करारा जबाब देना होगा जो हमें तोड़ना चाहते हैं, हमारी अखंडता को खंड-खंड कर देना चाहते हैं। प्रत्येक भाषा अपने में महान होती है, उसका कोई भी व्यक्ति उसका अपमान नहीं कर सकता। कोई भी भाषा बड़ी या छोटी नहीं होती। भाषा तो एक माध्यम है अपने विचारों के आदान-प्रदान का जिससे हम आसानी से एक-दूसरे से अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकें। भाषा को कभी भी किसी विशेष पंथ, संप्रदाय, क्षेत्र से जोड़कर नहीं देखना चाहिए। प्राचीनकाल में भी लोग अफ्रीका, यूरोप, पश्चिम एशिया, चीन, अफगानिस्तान से लोग यहां आए और बस गए। उन्होंने साथ में अपने भाषा को भी लाया एवं घूल मिल गए। इससे उनके भाषा का अपमान नहीं हुआ बल्कि उनकी भाषा और उन्नत हुई। अतः हमें इस पर ध्यान देना चाहिए कि भाषा के लिए आपस में लड़ाई न हो ताकि उन विभाजनकारी मंसूबों को कभी सफल न होने देना। यह हर भारतीय का कर्तव्य है जिस तरह से अंग्रेजी को वैश्विक भाषा माना गया है उसी तरह हिंदी को भी वैश्विक भाषा बनाने का प्रयास हर भारतीय को करना चाहिए। यह तभी संभव है जब अपने देश में हिंदी का सम्मान हो, आदर हो। सभी इस भाषा को अपनाएं, सारा देश जब हिंदी भाषा को अपना लेगा तथा भाषायी आधार पर झगड़े बंद हो जाएंगे तभी हिंदी को हम वैश्विक भाषा बना सकते हैं।

हिंदुस्तान की भाषा

हिंदुस्तान की भाषा हिंदी है। हिंदी उत्तर भारत की भाषा नहीं है, वह तो हमारे संघर्षों से जन्मी भाषा है। दक्षिण भारत की भाषाएं और अन्य भारतीय भाषाएं हिंदी से पहले थीं। हिंदी को जन्म देने में अनेक भारतीय तथा विदेशी भाषाओं और बोलियों का हाथ है। विदेशी आक्रांताओं के खौफनाक इरादों से जिस भाषा का जन्म हुआ, हिंदी उसी का

नाम है। आजादी के लिए जिस भाषा ने जनमानस को उद्वेलित किया, वह हिंदी भाषा है। हिंदी किसी राज्य की नहीं, समूचे देश के संघर्ष की भाषा है। उसका सबसे बड़ा प्रमाण है कि हिंदी में तीन लाख से अधिक का विपुल शब्द भंडार है जिसमें फारसी, अरबी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, रूसी, पंजाबी, तमिल, मलयालम, पस्तो, कन्नड़, मराठी, बंगाली, सिंधी, गुजराती, संथाल आदि भाषा एवं बोलियों के शब्द हैं। पचास हजार शब्द तो आसानी से मिल जाते हैं।

यह बात एकदम साफ है कि हिंदुस्तान की माध्यम भाषा हिंदी है। उसका अन्य भारतीय भाषाओं से संबंध है। हिंदी अंग्रेजी का स्थान लेगी न कि अन्य भारतीय भाषा का। क्षेत्रीय भाषाओं का विकास निरंतर चलता रहेगा, दक्षिण वालों की यह आवाज कतई नहीं है कि अंग्रेजी को यथावत रखा जाए। यह तो उनकी आवाज है जिन्हें अपनी भाषा और अपने देश से प्रेम नहीं है। वे अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहते हैं। जिनके बच्चे अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ रहे हैं, अंग्रेजों के समय जितने अंग्रेजी माध्यम के स्कूल नहीं थे, उनसे कई गुना ज्यादा आज है और दिन प्रतिदिन छोटे से छोटे कस्बों में बराबर खुलते जा रहे हैं। मैकाले ने जिस काम को छोड़कर गया था, वे उस काम को पूरा कर रहे हैं।

निष्कर्ष:

यदि भारत की समस्त भाषाओं की लिपि देवनागरी लिपि हो जाए तो सभी भाषाओं में स्वतः नजदीकी पैदा हो जाएगी तथा सभी भाषाओं का शब्दकोष विस्तृत हो जाएगा। देश की वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लेना जरूरी है कि अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी को माध्यम भाषा के रूप में कार्य करने दिया जाए।



अपने दुश्मनों पर विजय पाने वाले की तुलना में मैं उसे शूरवीर मानता हूँ जिसने अपनी इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर ली है; क्योंकि सबसे कठिन विजय अपने आप पर विजय होती है।

- अरस्तु



वेलन्टाइन डे

श्री पंकज वर्मा
अवर श्रेणी लिपिक, अहमदाबाद

14 फरवरी दिलवालों का दिन
कहलाता है वेलन्टाइन डे
जब आता है वेलन्टाइन डे
दिल में मीठी सी इक हलचल
मचाता है वेलन्टाइन डे

बिना कहे भी बहुत कुछ
कह जाता है वेलन्टाइन डे
हर पल प्यारा अहसास
कराता है वेलन्टाइन डे

प्यार ही जिंदगी है, जिंदगी को
बता जाता है वेलन्टाइन डे
किसी का हाले-दिल किसी तक
पहुंचाता है वेलन्टाइन डे

कहीं प्यार को प्यार से
मिलाता है वेलन्टाइन डे
कहीं किसी दिल को तन्हाई
की याद दिलाता है वेलन्टाइन डे

हर तरफ प्यार की खूशबू
लुटाता है वेलन्टाइन डे
इसलिए मेरे दिल को बहुत
भाता है वेलन्टाइन डे

कोई हमारा नहीं तो क्या,
प्यार की फुहार से तो
भिगो जाता है वेलन्टाइन डे।



मां-बाबा

प्रवीण वी पडावे
उच्च श्रेणी लिपिक, मुंबई

घर मेरा एक बरगद है
मेरे पापा जिसकी जड़ है
सुनी छाव है मेरी मां
यही है मेरा आसमां

पापा का है प्यार अनोखा
जैसे शीतल हवा का झोका
मां की ममता सबसे न्यारी
उंगली पकड़ चलना सिखलाते

पापा हमको खुब घुमाते
अपनी नींद देके चैन से सुलाते हमको
अपने आंसू छुपाकर हंसाते हमको
मां मलहम बनकर लग जाती

जब भी हमको चोट सताती
मां-पापा बिन दुनिया सूनी
जैसे तपती आग की धूनी
मां ममता की धारा है
पिता जीने का सहारा है ॥

वर्ष 2014 में माननीय सदस्यों की सेवानिवृत्ति

क्रम सं.	नाम (श्री/सुश्री/श्रीमती)	पदनाम	पीठ	सेवानिवृत्ति की तिथि
1	डी.के. त्यागी	न्यायिक सदस्य	अहमदाबाद	07.07.2014
2	टी.के. शर्मा	न्यायिक सदस्य	राजकोट	18.08.2014
3	बी.आर. जैन	लेखा सदस्य	जयपुर	09.08.2014
4	हरि ओम मराठा	न्यायिक सदस्य	जोधपुर	14.10.2014
5	यू.बी.एस. वेदी	न्यायिक सदस्य	दिल्ली	28.07.2014
6	डी.के. श्रीवास्तव	लेखा सदस्य	दिल्ली	31.07.2014
7	डॉ.ओ.के. नारायणन	उपाध्यक्ष	चेन्नै	24.11.2014
8	डी.के. त्यागी	न्यायिक सदस्य	अहमदाबाद	07.07.2014

वर्ष 2014 में अधिकारियों की सेवानिवृत्ति

क्रम सं.	नाम (श्री/सुश्री/श्रीमती)	पदनाम	पीठ	सेवानिवृत्ति की तिथि
1	पी.के. रविकुमार	वरि. निजी सचिव	मुंबई	30.11.2014
2	एस.आर. चव्हाण	निजी सचिव	अहमदाबाद	31.07.2014
3	सी.पी. उपाध्याय	वरि. निजी सचिव	इंदौर	31.10.2014
4	सुरेश कुमार	वरि. निजी सचिव	चंडीगढ़	31.12.2014
5	एस.के. राणा	वरि. नि. सचिव	अमृतसर	31.10.2014
6	वाय. जगन मोहन राव	वरि. निजी सचिव	हैदराबाद	31.07.2014
7	टी. प्रभाकर राव	वरि. निजी सचिव	हैदराबाद	31.12.2014

वर्ष 2014 में कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति

क्रम सं.	नाम (श्री/सुश्री/श्रीमती)	पदनाम	पीठ	सेवानिवृत्ति की तिथि
1	मुकुन्द जी अरदेकर	वरिष्ठ चपरासी	मुंबई	31.08.2014
2	जी. मारथामल	वरि. चपरासी	चेन्नै	30.11.2014
3	बी. आनंदम	स्टाफ कार ड्राइवर	हैदराबाद	31.07.2014

वर्ष 2014 में कर्मचारियों की नियुक्ति

क्रम सं.	नाम (श्री/सुश्री/श्रीमती)	पदनाम	पीठ	नियुक्ति की तिथि
1.	स्वाति डी. दाते	पुस्तकालयाध्यक्ष	मुंबई	13.06.2014
2.	मनीष कुमार	अवर श्रेणी लिपिक	दिल्ली	24.04.2014
3.	पूनम मिश्रा	पुस्तकालयाध्यक्ष	अहमदाबाद	26.06.2014
4.	कु. मिलन जी. पाटिल	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
5.	कु. शीतल ई. जाधव	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
6.	कु. मोनिका खिलारी	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
7.	आर. उषा	अवर श्रेणी लिपिक	चेन्नै	29.09.2014
8.	सुनील	अवर श्रेणी लिपिक	नागपुर	21.11.2014
9.	आशा देवी	अवर श्रेणी लिपिक	दिल्ली	16.06.2014
10.	कु. शीतल अरोरा	अवर श्रेणी लिपिक	दिल्ली	24.04.2014
11.	अश्विनी ए. भाडे	अवर श्रेणी लिपिक	पुणे	24.04.2014
12.	वृंदा राजौर	अवर श्रेणी लिपिक	अहमदाबाद	24.04.2014
13.	कु. नीलम कराडकर	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
14.	रेखा आर.	अवर श्रेणी लिपिक	बेंगलूरु	24.04.2014

15.	एन. गायत्री	अवर श्रेणी लिपिक	बेंगलूरु	24.04.2014
16.	कु. सोनाली पाडगे	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
17.	कु. प्रमिला अल्मेडिया	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
18.	ई.एल. श्रीलता	अवर श्रेणी लिपिक	हैदराबाद	24.04.2014
19.	प्रवीण कुमार	अवर श्रेणी लिपिक	दिल्ली	24.04.2014
20.	राधिका	अवर श्रेणी लिपिक	दिल्ली	24.04.2014
21.	माधवी विष्ट	अवर श्रेणी लिपिक	दिल्ली	24.04.2014
22.	हर्षद कुमार ए. साल्वे	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
23.	जान्हवी गाडे	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
24.	ज्योति अग्रवाल	अवर श्रेणी लिपिक	दिल्ली	24.04.2014
25.	न्हानू एन. मोराजकर	अवर श्रेणी लिपिक	पणजी	24.04.2014
26.	सोनाली मुंशी	अवर श्रेणी लिपिक	कोलकाता	24.04.2014
27.	गिरीश दत्त	अवर श्रेणी लिपिक	कोलकाता	24.04.2014
28.	एन्नी योलंद सिल्वेरिया	अवर श्रेणी लिपिक	पणजी	24.04.2014
29.	विपल पाठक	अवर श्रेणी लिपिक	कटक	24.04.2014
30.	अरूण कुमार गुप्ता	अवर श्रेणी लिपिक	चंडीगढ़	24.04.2014
31.	सुखविंदर कौर	अवर श्रेणी लिपिक	चंडीगढ़	24.04.2014
32.	बी.एम. रमेश	अवर श्रेणी लिपिक	बेंगलूरु	24.04.2014
33.	एम. मंजुनाथ	अवर श्रेणी लिपिक	बेंगलूरु	24.04.2014
34.	दयाल सिंह विष्ट	अवर श्रेणी लिपिक	इंदौर	24.04.2014
35.	कु. सोनाली आर. बरसोडे	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
36.	संजीव कुमार	अवर श्रेणी लिपिक	चंडीगढ़	24.04.2014
37.	पूर्वता एस. सूर्वे	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
38.	मंजुला के.	अवर श्रेणी लिपिक	बेंगलूरु	24.04.2014
39.	मिली	अवर श्रेणी लिपिक	दिल्ली	24.04.2014
40.	कु. पुष्पा रानी	अवर श्रेणी लिपिक	चंडीगढ़	24.04.2014
41.	श्रीमती योगिता शर्मा	अवर श्रेणी लिपिक	जयपुर	24.04.2014
42.	आर.के. हैडल	अवर श्रेणी लिपिक	अहमदाबाद	24.04.2014
43.	डी.एम. परमार	अवर श्रेणी लिपिक	अहमदाबाद	24.04.2014
44.	वर्षा आर. चव्हान	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
45.	अमन नागर	अवर श्रेणी लिपिक	जोधपुर	24.04.2014
46.	पुनीत कुमार	अवर श्रेणी लिपिक	चंडीगढ़	24.04.2014
47.	बसंत गुप्ता	अवर श्रेणी लिपिक	जयपुर	24.04.2014
48.	प्रशांत एन. वराडकर	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
49.	संजय एस. मलगांवकर	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
50.	संकल्प एल. नरे	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
51.	संगीता जी. चव्हान	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
52.	शीतल एस. घोटगे	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
53.	उषा बी. वारंग	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
54.	स्मिता ए. आंब्रे	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014
55.	सुजीता पी. नोगलकर	अवर श्रेणी लिपिक	मुंबई	24.04.2014

**आयकर अपीलीय अधिकरण, मुंबई पीठ में सितंबर, 2014 में
आयोजित हिंदी पखवाड़े की प्रतियोगिताओं के प्रथम पुरस्कार विजेताओं की सूची**

क्रम सं.	प्रतियोगिता	आयोजन की तिथि	प्रथम पुरस्कार विजेता	पदनाम
1	प्रश्नमंच	15.09.2014	श्री अमित कुमार	अवर श्रेणी लिपिक
2	निबंध	16.09.2014	श्री जयशंकर कुमार सिंह	अवर श्रेणी लिपिक
3	अनुवाद	17.09.2014	श्री एम.एन. वीरावधानी	उच्च श्रेणी लिपिक
4	टिप्पण-प्रारूपण	18.09.2014	श्री उदय राणे	अवर श्रेणी लिपिक
5	हिंदी में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन	18.09.2014	श्रीमती संगीता चव्हाण एवं श्रीमती समिधा सूरज कदम	अवर श्रेणी लिपिक आउटसोर्सिंग पर
6	भाषण	19.09.2014	श्री जयशंकर कुमार सिंह	अवर श्रेणी लिपिक
7	पुस्तक समीक्षा	19.09.2014	श्रीमती ऊषा वारंग	अवर श्रेणी लिपिक
8	हिंदी टंकण	22.09.2014	श्रीमती मिलन गौतम पाटिल	अवर श्रेणी लिपिक
9	बुलेटिन लेखन	22.09.2014	श्री तरुण कुमार	उच्च श्रेणी लिपिक
10	अंताक्षरी	23.09.2014	श्रीमती स्मिता येवल एवं श्रीमती उल्का परब	प्रधान लिपिक प्रधान लिपिक

वर्ष 2013 में प्रकाशित बुलेटिन के सर्वश्रेष्ठ रचना हेतु पुरस्कृत विजेताओं की सूची

क्रम सं.	पुरस्कार	विजेता का नाम	पदनाम
1.	प्रथम	श्री तरुण कुमार	उच्च श्रेणी लिपिक, मुंबई पीठ
2.	द्वितीय	श्री अमित कुमार	अवर श्रेणी लिपिक, मुंबई पीठ
3.	तृतीय	श्री चंद्र प्रकाश	अवर श्रेणी लिपिक, लखनऊ पीठ
4.	प्रोत्साहन	श्रीमती सरोजबाला	सहायक पंजीकार, चंडीगढ़ पीठ
5.	प्रोत्साहन	श्रीमती योगिता शर्मा	अवर श्रेणी लिपिक, जयपुर पीठ

आ.अ.अ., मुंबई में हिन्दी पखवाड़ा-2014 के छायाचित्र



हिंदी पखवाड़ा का उदघाटन करते हुए श्री एच.एल. कारवा, माननीय अध्यक्ष एवं अन्य सदस्यगण



हिंदी पखवाड़े के उदघाटन समारोह में मंच पर आसीन श्री एच.एल. कारवा, माननीय अध्यक्ष, श्री राजेन्द्र, अध्यक्ष, रा.भा.का.स., मुंबई एवं श्री आई.पी. बंसल, न्यायिक सदस्य



हिंदी पखवाड़े के उदघाटन समारोह में आयकर अपीलीय अधिकरण, मुंबई पीठ के अधिकारी एवं कर्मचारी



पखवाड़े के उदघाटन पर सरस्वति वंदना प्रस्तुत करते हुए कर्मचारीगण





हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह में श्री वि.के. सिंघल, सहायक पंजीकार को पुरस्कार की राशि प्रदान करते हुए श्री एच.एल. कारवा, माननीय अध्यक्ष



हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह में विजित प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री डी. मनमोहन, माननीय उपाध्यक्ष



हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह में विजित प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री विजयपाल राव, न्यायिक सदस्य



हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह के श्रोतागण

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केन्द्रीय सरकार कार्यालय) कोलकाता
TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION COMMITTEE (CENTRAL GOVT. OFFICE) KOLKATA

नराकास सचिवालय
 आयुध निर्माणी बोर्ड, कोलकाता


 सत्यमेव जयते

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि नराकास कोलकाता (केन्द्रीय सरकार कार्यालय) की दिनांक 11 फरवरी, 2014 को आयोजित कोलकाता की 44 वीं बैठक में (अपेल. जून. अवे. गुलफि. सिने. 2013) तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा के आधार पर ~~नराकास~~ ~~अपीलीय आधिकरण~~ विभाग / कार्यालय ने ~~द्वितीय~~ स्थान प्राप्त किया।

सरताज सिंह
 अध्यक्ष, आयुध निर्माणी बोर्ड
 एवं
 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोलकाता
 (केन्द्रीय सरकार कार्यालय)

दिनांक: 11 फरवरी, 2014
 स्थान: कोलकाता

आयकर अपीलीय आधिकरण, कोलकाता पीठ को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर कोलकाता नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केन्द्रीय सरकार कार्यालय) कोलकाता द्वारा प्रदान किया गया प्रशस्ति पत्र।

